श्री सद्गुरु महर्षि मलयालस्वामी आश्रम् - सोलापूर

श्री प्रत्यङ्गिरा साधना

संकलन कर्ता : **स्वामी ब्रह्मविद्यानन्द**

श्री सद्गुरु महर्षि मलयालस्वामी आश्रम्,

प्लॉट नं. 48, कलावतीनगर,(न्यू सुनिलनगर),

एम.आय.डी.सी.

सोलापूर - महाराष्ट्र

Coputerized by : Swami Brahmavidyananda

https://archive.org/details/@swami_ brahmavidyananda

Email: aumhreemaum@gmail.com

विषय सूचिका

ॐ

माँ प्रत्यङ्गिरा की संक्षिप्त कहानी

प्रत्यंगिरा एक हिन्दू देवी हैं। इनका सिर सिंह का है और शेष शरीर नारी का है। प्रत्यंगिरा शक्ति स्वरूपा हैं। वे विष्णु, रुद्र तथा दुर्गा देवी के एकीकृत रूप हैं। आदि पराशक्ति महादेवी का यह तीव्र रूप महादेव के शरभ अवतार की शक्ति है। प्रभु नरसिंह और प्रभु शरभ में हो रहे भीषण युद्ध पर इन्होंने ही रोक लगाई थी। दोनों के शक्तियों को स्वयं में समा कर देवी ने ही दोनों के क्रोध को शांत किया। उन्हें अपराजिता तथा निकुम्बला के नाम से भी जाना जाता हैं। रावण के कुल की आराध्या देवी प्रत्यंगिरा ही थी।

माँ देवी के समय-समय पर कई रूप हुए है जिन्होंने दुष्टों, पापियों तथा अधर्मियों का नाश किया हैं। इसी के साथ माँ ने कई अवतार अपनी महिमा, शक्ति व पराक्रम को दिखाने के लिए भी लिए हैं। इसी में उनका एक रूप था माँ प्रत्यंगिरा/ प्रत्यङ्गिरा का रूप जो अति भयानक तथा प्रलयकारीथा।यह रूप उन्होंने किसी दुष्ट राक्षस या दैत्य का वध करने के लिए नही अपितु भगवान शिव तथा भगवान विष्णु के बीच चल रहे युद्ध को समाप्त करने के उद्देश्य से लिया था। आइये उस रोचक घटना के बारे में जानते है।

यह कथा सतयुग में भगवान के नृसिंह अवतार लेने तथा हिरण्यकश्यप के वध होने के बाद से जुड़ी हुई हैं। हालाँकि विभिन्न पुराणों तथा शास्त्रों में इसका अलग-अलग वर्णन किया गया हैं। सबसे प्राचीन मान्यता वह है जो स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने कही थी जिसके अनुसार भगवान नृसिंह हिरण्यकश्यप का वध करने के पश्चात प्रह्लाद को उसका उत्तराधिकारी घोषित करके अंतर्धान हो गए थे।अर्थात जब भगवान नृसिंह ने हिरण्यकश्यप का वध कर दिया तब उनका क्रोध प्रह्लाद ने शांत कर दिया था। उसके पश्चात उन्होंने प्रह्लाद का राज्याभिषेक किया तथा पुनः भगवान विष्णु में समा गए। किंतु शिव पुराण, स्कन्द पुराण तथा कुछ अन्य धर्म शास्त्रों में इस घटना के बाद की कथा का वर्णन किया गया है। आज हम आपको उसी के बारे में बताएँगे तथा समझाएंगे कि आखिर क्यों माँ को अपना उग्र रूप प्रत्यंगिरा लेना पड़ा।

हरि और हर अर्थात विष्णु और शिव, दोनों की शक्ति के निष्पादक होने के लिए शास्त्रों ने उन्हें देवी की उत्पत्ति का श्रेय दिया है। शास्त्रों में, जब भगवान नारायण ने भगवान नरसिंह का तामस अवतार लिया, तो वे अपने हाथों से हिरण्यकश्यप का वध करने के बाद भी शांत नहीं हुए। आंतरिक आवेग और क्रोध ने नरसिंह को उस युग के हर नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति का अंत करने के अपने आग्रह को नियंत्रित नहीं करने दिया। वे अजेय भी थे। देवताओं ने नरसिंह अवतरण को शांत करने के लिए भगवान शिव से दया की प्रार्थना की। अनाथों के स्वामी, महादेव ने तब शरभ का रूप धारण किया, जो आधा सिंह और आधा पक्षी था। वे दोनों बड़े पैमाने पर और लंबे समय तक बिना किसी परिणाम के साथ लड़ते रहे। हरि और हर के बीच के युद्ध को रोकना असंभव प्रतीत हो रहा था, इसलिए देवताओं ने देवी महाशक्ति महा योगमाया दुर्गा का आह्वान किया, जो अपने मूल रूप में भगवान शिव की पत्नी हैं तथा उनके पास नारायण को योगनिद्रा में विलीन करने की व्यापक क्षमता भी थी क्योंकि वे स्वयं योगनिद्रा हैं। देवी महामाया ने फिर आधे सिंह और आधे मानव का देह धारण किया। देवी उनके सामने इस तीव्र स्वरूप में प्रकट हुई और अपने प्रचण्ड हुंकार से उन दोनों को स्तब्ध कर दिया, जिससे उन दोनों के बीच का भीषण युद्ध समाप्त हो गया और सृष्टि से प्रलय का संकट टल गया।

देवी प्रत्यंगिरा नारायण तथा शिव की संयुक्त विनाशकारी शक्ति रखती है और शेर और मानव रूपों का यह संयोजन अच्छाई और बुराई के संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है। देवी को अघोर लक्ष्मी, सिद्ध लक्ष्मी, पूर्ण चन्डी, अथर्वन भद्रकाली, आदि नामों से भी भक्तों द्वारा संबोधित किया जाता है।

जय माँ प्रत्यङ्गिरे - सबकी रक्षा करो माँ

स्वामी ब्रह्मविद्यानन्द

श्रीप्रत्यङ्गिरा स्तोत्रं तथा अनुष्ठानम्

अथ प्रत्यङ्गिरा ध्यानम्ः—

ॐ खड्गं(टङ्कं) कपालं डमरुं त्रिशूलं संबिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।

पिङ्गोर्ध्वकेशासित भीमादंष्ट्रा, भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली।।

अथ प्रत्यङ्गिरा मन्त्रः :—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रक्ष, मम शत्रून् भक्ष भक्ष स्वाहा।(पृष्ठ 47)

अथ श्रीप्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्

अथ विनियोगः :—अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, प्रत्यङ्गिरा देवता, ह्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, सर्वार्थसाधने विनियोगः।

हाथ में जल लेकर "अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमन्त्रस्य" से आरम्भ कर "सर्वार्थसाधने विनियोगः" तक पढकर जल को नीचे किसी पात्र में गिरा देना चाहिए।

मन्दरस्थं सुखासीनं भगवन्तं महेश्वरम्।

समुपागम्य चरणैः पार्वती परिपृच्छति ॥ 1 ॥

देव्युवाच :–

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया।

नर नारी हितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥2॥

राज्ञां माण्डलिकानां च दीनानां च महेश्वर।

विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणार्थसाधिनी ॥3॥

महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्निभयेषु च।

व्याघ्र- दंष्ट्रा- कराघाते नदी-नद-समुद्रगे ॥4॥

श्मशाने दुर्गमे घोरे सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे।

अभिचारेषु सर्वेषु रणे राजकुलेषु च ॥5॥

धारिता पाठिता देवि! समीहितफलप्रदा ।

पाठिता साधकेन्द्रेण कारयेत् स्वान् मनोरथान् ॥6॥

सौभाग्यजननीं नित्यं नृणां वश्यकरी तथा ।

तां सुविद्यां सुरश्रेष्ठ! कथयस्व मयि प्रभो! ॥7॥

*मन्दराचल पर सुखपूर्वक बैठे हुए भगवान शंकर के पास आकर पार्वती ने पूछा॥1॥ **देवी ने कहा----जो प्रत्यङ्गिरा नामक महाविद्या उत्तम फल देनेवाली** है, जिससे स्त्री-पुरुषों का हित तथा बालकों की रक्षा होती है॥2॥माण्डलिकों, राजाओं, दीनजन, विद्वान् तथा द्विजातियों का जो विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करनेवाली है॥3॥भयंकर महाभय, बिजली, अग्निभय, व्याघ्र, नदी, नद, समुद्र, श्मशान, दुर्गमस्थान, घोरसंग्राम, शत्रुसंकट, मारणादि अभिचार और राजकुलादि में धारण तथा पाठ से जो अभिलषित वस्तु देनेवाली है, साधकों के द्वारा पढने पर जो सभी मनोरथ पूर्ण करती है॥4-6॥जो संपूर्ण सौभाग्यों की जननी तथा समस्त मनुष्यों को वश में करनेवाली है, हे सुरश्रेष्ठ! आप मुझे उस विद्या को बताइए॥7॥*

भैरव उवाचः–साधु साधु महाभागे! जन्तूनां हितकारिणि।

त्वद्वाक्येन सुरारिघ्ने! कथयामि न संशयः ॥8॥

देवी प्रत्यंङ्गिरा विद्या सर्व ग्रह निवारिणी ।

मर्दिनी सर्व दुष्टानां सर्वपाप प्रणाशिनी ॥9॥

सौभाग्यजननी देवी बलपुष्टिकरी तथा ।

चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषु पवनेषु च ॥10॥

राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते ।

पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता ॥11॥

लिखित्वा च करे कण्ठेबाहौ शिरसि धारयेत् ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युं नास्ति कदाचन ॥12॥

धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् धृवम् ।

धारिता वार्चिता विद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदिता ॥13॥

गृहे चैवाष्टसिद्धिश्च देव-राक्षस-पन्नगाः ।

न तस्य पीडा कुर्वन्ति ये चान्ये पीडकग्रहाः ॥14॥

भैरव ने कहा---*हे प्राणियों का हित करनेवाली, महाभागे, पार्वती, तुमने यह प्रश्न ठीक ही किया। हे असूरों का विनाश करनेवाली, मैं उस महाविद्या को तुम से कह रहा हूँ, इसमें संशय नहीं है॥8॥प्रत्यङ्गिरा देवी, जो महाविद्या के नाम से विख्यात है। वही संपूर्ण ग्रहों का निवारण करनेवाली, दुष्टों का मर्दन करनेवाली तथा समस्त पापों का विनाश करनेवाली है॥9॥वह देवी सौभाग्य की जननी(माता), बल तथा पुष्टि प्रदान करनेवाली है, चतुष्पथ, घोर वन झंझावात, ॥10॥राजद्वार, दुर्भिक्ष तथा महाभय उपस्थित होनेपर पढने तथा पाठ कराने से संपूर्ण सिद्धियों को देने वाली है॥11॥जो महाविद्या के इस मन्त्र तथा यन्त्र को लिखकर बाहु, हाथ, कण्ठ तथा शिर में धारण करतें हैं। वे सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जातें हैं और कभी अकाल मृत्यु से नहीं मरते॥12॥योग से युक्त पुरुष यदि इस महाविद्या के यन्त्र तथा मन्त्र को धारण करें तो निश्चय ही उसकी रक्षा होती है। धारण तथा अर्चन-पूजन से यह प्रत्यङ्गिरा शुभफल देनेवाली है॥13॥उसके घर में आठों सिद्धियों का निवास रहता है, देवता, राक्षस, पन्नग (सर्प) तथा अन्य पीडाकारक ग्रह उसके घर में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करते॥14॥*

विद्यानामुत्तमा विद्या पठिता वार्चिता सदा ।

यस्याङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता ॥15॥

सिद्धा सुसिद्धिदा नित्या विद्येयं परमा स्मृता ।

श्रीमता घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी ॥16॥

प्रत्यङ्गिरा मया प्रोक्ता रिपून् हन्यान्न संशयः।

हरिचन्दनमिश्रेण गोरोचन कुङ्कुमेन च ॥17॥

लिखात्वा भूर्जपत्रेषु धारणीया सदा नृभिः।

पुष्प-धूपैर्विचित्रैश्च बल्युपहारपूजनैः ॥18॥

पूजयित्वा यथान्यायं शान्तकुम्भेन वेष्टयेत्।

धारयेद्य इमां विद्यां निश्चितां रिपुनाशिनीम् ॥19॥

विलयं यान्ति रिपवः प्रत्यङ्गिरा विधानतः।

यद्यत् स्पृशति हस्तेन यद्यत् खादति जिह्वया ॥20॥

अमृतं तद्भवेत्सर्वं मृत्युर्नास्ति कदाचन।

कर्मणा यो जपेद्यस्तु कृत्रिमं दारुणं सदा ॥21॥

विद्याओं में सर्वोत्तम महाविद्या प्रत्यङ्गिरा भाषण से, पाठ से तथा अर्चन से सिद्धि को प्रदान करनेवाली है। ये महाविद्या नित्य है, भगवान् शंकर ने घोर (निष्पाप) रूप धारण कर इन घोररूपिणी (निष्पापा) महाविद्या का व्याख्यान किया है॥15, 16॥ ***भगवान् भैरव ने कहा ---हे पार्वति, मैं जिस प्रत्यङ्गिरा को*** *तुम से कह रहा हूँ, वे शत्रुओं का विनाश करनेवाली है। हरिचन्दन, गोरोचन, कुंकुम से॥17॥ भोजपत्र पर लिखकर इस प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र को मनुष्य को धारण करना चाहिए। पुष्प, धूप तथा विचित्र पुष्पों तथा बलि से नित्य पूजा करना चाहिए॥18॥ उपर्युक्त विधि से पूजा कर स्वर्ण के समान पीले वस्त्र से इसे लपेट कर धारण करने से निश्चय ही ये शत्रुवर्ग का विनाश करनेवाली है॥ 19॥ प्रत्यङ्गिरा के शास्त्रीय अनुष्ठान मात्र से समस्त शत्रु विनष्ट हो जाते हैं तथा वह पुरुष जिसको अपने हाथ से स्पर्ष करता है, जिसको जिह्वा से खाता है॥20॥ वह सब उसके लिए अमृत हो जाता है। उस पुरुष की कदापि मृत्यु नहीं होती। और जो साधक इसको पढता है उसको कभी कृत्रिम (बनावटी) तथा कठिन कष्ट नहीं होता॥21॥*

भक्षितं तृप्तिमत्याशु नरस्य तस्य सुव्रते!।

तथास्यां पठ्यमानायां जीर्यते नात्र संशयः ॥22॥

नृणां रक्षाकारी देवी सर्वसिद्धिकरी स्मृता।

सर्वमन्त्रविनाशी च गोलकस्थान्तरः परा ॥23॥

सर्वव्याधिहरी विद्या सिद्धिदात्री महेश्वरी।

प्राप्नोति वसुधां सर्वां रिपुहस्तगतां श्रियम् ॥24॥

वशास्तस्यैव तिष्ठन्ति शत्रवः प्राणहारकाः।

अभ्यस्यतां याति विद्यां सिद्धिविद्याप्रसादतः ॥25॥

हे सुव्रते! जो पुरुष प्रत्यङ्गिरा का पाठ करता है उसको भोजन शीघ्र ही तृप्ति प्रदान करता है, तथा पच जाता है। और इसके पढने से कभी वार्धक्य (बुढौती) का अनुभव नहीं होता, यह निःसन्देह है॥22॥ ये प्रत्यङ्गिरा मनुष्यों की रक्षा करनेवाली है, सिद्धि देने वाली है और ये परा है तथा गोलोक में निवास करनेवाली है। इनके सामने सभी मन्त्रों का प्रभाव नष्ट हो जाता है॥23॥ यह महाविद्या सम्पूर्ण व्याधियों का विनाश करनेवाली है, सिद्धि देने वाली है। महाविद्या की उपासना करनेवाला पुरुष शत्रु के हाथ में गयी हुई भूमि को भी प्राप्त कर लेता है॥24॥ महाविद्या की उपासना करनेसे प्रणहारक शत्रु भी उसके वश में हो जाते हैं। इस सिद्ध विद्या के बारंबार अनुष्ठान से मनुष्य विद्या को प्राप्त कर लेता है॥25॥

अबला च वशाद्यस्य सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः।

चराचरमिदं सर्वं स-शैलवनकाननम् ॥26॥

नरनारी समाकीर्णं साधकस्य च सुव्रते!।

सर्वत्र वशतां यान्ति यजमानस्य नित्यशः॥27॥

गोलकस्य प्रभावेन प्रत्यङ्गिरा प्रभावतः।

त्रिपुरश्च मया दग्ध इमां विद्यां च बिभ्रता ॥28॥

निर्जितास्त्रासुराः सर्वे देवैर्विद्याभिमानिभिः।

गोलकं च प्रवक्ष्यामि भैषज्यं ते च सुव्रते ॥29॥

अनेक सुन्दरी स्त्रियां, उस पुरुष के वश में हो जाती हैं। हे सुव्रते! यह शैल, कानन समेत सारा चराचर विश्व, जो नर-नारी समाकीर्ण है, उस साधक के वश में हो जाता है॥26, 27॥ गोलक यन्त्र के प्रभाव से तथा प्रत्यङ्गिरा के

प्रभाव से और इस महाविद्या के धारण से ही मैंने त्रिपुर को जलाया॥28॥जिस गोलक के प्रभाव से देवताओं ने असूरों पर विजय प्राप्त किया, हे सुव्रते! उस गोलक का निरूपण करता हूँ॥29॥

पञ्चवर्णैः पञ्चदलैः द्वारर्धे द्वारशोभितम्।

द्वात्रिंशत्पत्रमध्ये तु लिखेन्मन्त्रस्य दैवतम् ॥30॥

कूटस्थं कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।

षट्कारेण संयुक्तं रक्षेच्च साधकोत्तमः ॥31॥

विष्णुकान्तां मदनकं कुङ्कुमं रोचनं तथा।

आरुष्करं विषारिष्टं सिद्धार्थं मालतीं तथा ॥

एतद् द्रव्यगणं भद्रे! गोलमध्ये निधापयेत् ॥32॥

संभृतं धारयेन्मन्त्री साधको मन्त्रवित्सदा।

अधुना संप्रवक्ष्यामि प्रत्यङ्गिरां सुभाषितां ॥33॥

दिव्यैर्मन्त्रपदैश्चित्तैः सुखोपायैः सुखप्रदैः।

पठेद्रक्षाभिधानेन मन्त्रराजः प्रकीर्तितः ॥34॥

कमल के चारों और पांच पांच रंग के पांच पत्रों के मध्य बत्तीस पत्रों में फट् से संयुक्त मन्त्र को लिखें॥30॥उस कमल के दशों दिशाओं में पाँचों बीज स्थापित करे॥31॥ विष्णुकान्ता, दमनक, कुंकुम तथा रोचन, अरुष, विषारिष्ट, सिद्धार्थ तथा मालती आदि अष्टगन्ध को गोलक के मध्य में स्थापित करे॥32॥ इसे मन्त्रवेत्ता साधक को धारण करना चाहिए। हे देवि! अब मैं प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र को तुम से कहता हूँ, सुनो॥33॥स्वस्थ चित्त होकर, सुख का साधनभूत अतः सुख देने वाले इस मन्त्र के प्रत्येक पदों को सुललित रूप से पढना चाहिए। यह मन्त्र रक्षात्मक है और सभी मन्त्रों का राजा है॥34॥

"ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय" से लेकर "ऐं हुं हुं फट् स्वाहा" तक प्रत्यङ्गिरा के माला मन्त्र है।

अथातो मन्त्रपदानि भवन्ति। तानि मन्त्रान्युच्यन्ते—

ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय ॐ अनादि रूपाय अनादि पुरुषाय पुरुहूताय महामयाय महाव्यापिने महेश्वराय ॐ जगत्साक्षिणे सन्तापभूतव्यापिने महाघोरातिघोराय ॐ ॐ महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐ ॐ हिलि हिलि ॐ हन हन ॐ गीलि गिलि ॐ मिलि मिलि ॐ ॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धम धम बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय रं रं रं रं रं रक्ष रक्ष त्वं मां साधकं मां पाठकं च रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ऐं ऐं हुँ हुँ रक्ष रक्ष सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो महामेघौघ-सर्वतोग्निविद्युदर्क-संवर्त-कपर्दिनि! दिव्यकणिकाभ्यो रुह-विकच-पद्ममालाधारिणि! शितिकण्ठाभख द्वां कपालधृक् व्याघ्राजिनधृक् परमेश्वरप्रिये! मम शत्रून् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय देवता-पितृ-पिशाचोरग नागासुर-गरुड-गन्धर्व-किन्नर-विद्याधर-यक्ष-रक्षसान् ग्रहाँश्च स्तम्भय स्तम्भय ये च धारकस्य पाठकस्य वा सपरिवारस्य शत्रवः तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय ये च सर्वे मम अवि द्यां कर्म कुर्वन्ति कारयन्ति वा तेषां अविद्यां स्तम्भय स्तम्भय तेषां देशं कीलय कीलय तेषां बुद्धिर्घातय घातय ग्रामं घा तय घातय रोमं कीलय कीलय शत्रु स्वाहा। ॐ ॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां विद्यां स्त म्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखे स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रे स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां दन्तान् स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां उदरं स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रू णां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं कीलय कीलय ॐ

जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय ॐ सर्वसिद्धि महाभागे! मम धारकस्य पाठकस्य वा सपरिवारस्य शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा । ॐ हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यं यं यं यं यं रं रं रं रं रं लं लं लं लं लं वं वं वं वं वं शं शं शं शं शं षं षं षं षं षं सं सं सं सं सं हं हं हं हं हं क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं हुं हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ जः ॐ जः ठः ठः ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ जूं सः फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवति प्रत्यङ्गिरे! मम धारकस्य पाठकस्य वा सपरिवारस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ हुं हुं हुं हुं हुं ॐ हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति! दुष्टचण्डालिनि! त्रिशूल वज्राङ्कुश शक्ति धारिणि! रुधिर-मांसल-वसाभक्षिणि! कपाल खट्वाङ्गधारिणि! मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम मथ मथ सर्वदुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ हुं हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ॐ ह्रीं दंष्ट्राकरालानि! मम कृते मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-प्रयोग विषचूर्ण-शस्त्राद्य-विचार-सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते कारयन्ति करिष्यन्ति वा तान् सर्वान् हन हन हन प्रत्यङ्गिरे! त्वं मां धारकस्य सपरिवारकं रक्ष रक्ष हुं हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मम शरीरे रक्ष रक्ष फट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वरि! मम नेत्रे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं ब्रह्माणि! मम शिरो रक्ष रक्ष स्वाहा।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं कौमारि! मम वक्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं वैष्णवि! मम कण्ठं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं नारसिंहि! मम बाहू रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ वाराहि! मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं ऐन्द्रि! मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ चामुण्डे! मम गुह्यं रक्ष रक्ष स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ माहेश्वरि! मम जङ्घे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ मोहिनि! मम शत्रून् मोहय मोहय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ हुँ प्रत्यङ्गिरे ! मम शरीरं रक्ष रक्ष स्वाहा।

कूटस्था कुरते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।

फट्कारेण समोपेतं रक्ष त्वं साधकोत्तमे ! ॥1॥

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिनी द्राविणी तथा।

जृम्भिनी भ्रामरी रौद्री तथा संहारिणीति च ॥2॥

शक्तयः शोषिणी चैव शत्रुपक्षे नियोजिताः।

साधिता साधकेन्द्रेण सर्वशत्रु-विनाशिनी ॥3॥

आठों दिशाओं के मध्य भाग में पांच बीज एवं फड्कार से युक्त हे देवि! आप मेरी रक्षा करो॥1॥

1. स्तम्भिनी, 2. मोहिनी, 3. क्षोभिनी, 4. द्राविणी, 5. जृम्भिनी, 6. भ्रामरी, 7. रौद्री, 8. संहारिणी और 9. शोषिणी ये नौ शक्तियाँ श्रेष्ठ साधक के द्वारा साधित तथा शत्रुपक्ष में नियोजित होनेपर समस्त शत्रुओं का विनाश करती हैं॥2-3॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ स्तम्भिनि! मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हूँ मोहिनि! मम शत्रून् मोहय मोहय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ भ्रामिणि! मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ रौद्रि! मम शत्रून् रौद्रय रौद्रय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ संहारिणि! मम शत्रून् संहारय संहारय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ शोषिणि! मम शत्रून् शोषय शोषय स्वाहा।

य इमां धारयेद् विद्यां त्रिसन्ध्यं वापि यः पठेत्।

सोपि दुष्टान्तको भूत्वा हन्याच्छत्रून् न संशयः ॥4॥

सर्वं हि रक्षयेद् विद्यां महाभय-विपत्तिषु।

महाभयेषु घोरेषु न भयं विद्यते क्वचित् ।

सर्वान् कामानवाप्नोति मर्त्यो देवि! न संशयः ॥5॥

जो मनुष्य इस विद्या को अर्थात् इस प्रत्यङ्गिरा के मन्त्र को धारण करता है और तीनों सन्ध्याओं में इसका पाठ करता है, वह दुष्ट शत्रुओं को मारने में पूर्ण समर्थ होता है, इसमें संशय नहीं है॥4॥ महभय तथा विपत्ति काल में यह विद्या रक्षा करती है। घोर भयंकर स्थान में भी यह भयमुक्त करने वाली है। हे

देवि! अधिक क्या कहें, इसके जप और पाठ करनेवाले प्राणियों को सब कुछ निःसन्देह प्राप्त होता है॥5॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ प्रत्यङ्गिरे! विकटदंष्ट्रे! ह्रीं ह्रीं कालिकेलि! स्फ्रें स्फ्रें कारिणि मम शत्रून् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रें स्फ्रें किरि किरि कालि कालि महाकालि महा कालि श्रीं ह्रीं ऐं हुँ हुँ फट् स्वाहा।

अष्टोत्तरशतं जपेत् साक्षात् सिद्धीश्वरो भवेत्।

ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोनुष्टुप् प्रकीर्तितम्।

देवता कौशिकी प्रोक्ता नाम प्रत्यङिरैव सा॥6॥

कूर्चबीजं षडङ्गानि कल्पयेत् साधकोत्तमः।

सर्वाकृष्टोपचारैस्तु ध्यायेत् प्रत्यङ्गिरां शुभाम् ॥7॥

उपर्युक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करने से मनुष्य सिद्धों का राजा हो जाता है। इस मन्त्र के भैरव ऋषि एवं अनुष्टुप् छन्द और कौशिकी देवता हैं। यही कौशिकी प्रत्यङ्गिरा नाम से सुविख्यात है॥6॥ उत्तम साधक षडङ्गन्यास तथा कूर्चबीज करे। भगवती के प्रसन्न करनेवाले अनेक उपचारों को एकत्रित कर प्रत्यङ्गिरा का ध्यान करना चाहिए॥7॥

ध्यानम् :–खड्गं कपालं डमरुं त्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसम्।

पिङ्गोर्ध्वकेशी-सितभीमदंष्ट्रा भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली ॥8॥

वह भद्रकाली हमारा कल्याण करें, जो खड्ग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल को धारण करने वाली है। जिनके मस्तक में चन्द्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा ऊपर की ओर उठे हुए हैं, जिनके दांत अत्यन्त चमकीले तथा उग्र भयंकर हैं॥8॥

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमेकविंशति वासरान्।

शत्रून् सन्नाशयेत्तं च प्रकारोयं सुनिश्चितम् ॥9॥

अथाष्टम्यामर्धरात्रौ शरत्काले महानिशि।

आराधिता च सा काली तत्क्षणात् सिद्धिदा भवेत् ॥10॥

इस प्रकार प्रतिदिन भगवती प्रत्यङ्गिरा का ध्यान कर इक्कीस दिन पर्यन्त भगवती के मन्त्र का जप करना चाहिए। यह विधि निश्चित ही शत्रुओं विनाश करने वाली है॥9॥ शरत्-काल के नवरात्र में अष्टमी के दिन अर्धरात्र के महानिशा में आराधन करने से भगवती अवश्य ही मनोरथ को पूरी करनेवाली होती है॥10॥

सर्वोपचारसंपन्ना रक्तवस्त्रफलादिभिः।

पुष्पैश्च रक्तवर्णैश्च साधयेत् कालिकां पराम् ॥11॥

वर्षादूर्ध्वमजं मेषं मृगं वा विविधं बलिम्।

दद्यात्पूर्वं महेशानि! ततस्तु जपमाचरेत् ॥12॥

एकहायनतः काली सत्यं सत्यं सुसिद्धिदा।

मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्याद्विचक्षणः ॥13॥

मरीच-लाज-लवणैः सर्षपैर्मारणं भवेत्।

महासङ्कटरोगे च न भयं जायते क्वचित् ॥14॥

सम्पूर्ण पूजन की सामग्री से युक्त हो लाल वस्त्र, लाल फल तथा लाल फूलों से परा भगवती महाकाली का पूजन करना चाहिए॥11॥एक वर्ष तक निरन्तर जप करने के उपरान्त विविध प्रकार की बलि देनी चाहिए। तत्पश्चात् पुनः जप करना चाहिए॥12॥यह महाकाली एक वर्ष में सिद्धि प्रदान करने वाली है, यह बात सत्य है, सत्य है। प्रत्यङ्गिरा महाकाली के मूल मन्त्र से रात्रि में ही विद्वान् पुरुष को होम करना चाहिए॥13॥मरिच, लावा, तथा नमक और सरसों का हवन करनेसे मारण प्रयोग किया जाता है, इतना ही नहीं, उपर्युक्त विधि के हवन से महासंकट, रोग तथा भय उत्पन्न नहीं होते॥14॥

प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्ततः।

साध्यनामाङ्कितं कृत्वा शत्रुमय्यां च पुत्तलीम् ॥15॥

जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ प्रक्षिपेत् ततः।

एकायुतं जपं कृत्वा त्रिरात्रान्मरणं रिपोः ॥16॥

महाज्वरो भवेत्तस्य तप्ततामशलाकया।

गुदद्वारे प्रविन्यस्य सप्ताहान्मरणं रिपोः ॥17॥

प्रेत के पिण्ड को लेकर गोलक यन्त्र बनवाये फिर उस पर शत्रुका नाम लिखकर शत्रु का पुतला बनाकर॥15॥ उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें। चिता की अग्नि में हवन करें। दस हजार जप करे तो निश्चय ही तीन रात्रि के भीतर शत्रु मर जाता है॥16॥जलते हुए तामें की सलाई से शत्रु के पुत्तल बनाकर उपर्युक्त विधि से गुदा द्वार पर दागे तो शत्रु को महाज्वर उत्पन्न हो जाता है और वह सात रात के भीतर ही मर जाता है॥17॥

पुष्पसमर्पणविधि :–एकविंशतिदिने आद्यान्तं जपं कृत्वा नित्यं 108,

भुक्तौ मुक्तौ च शान्तौ च श्वेतपुष्पं विनिर्दिशेत्।

आकृष्टौ च वशीकारे रक्तं पुष्पं विनिर्दिशेत् ॥1॥

स्तम्भने मोहने चैव पीतपुष्पं विनिर्दिशेत्।

उच्चाटने मारणे च कृष्णपुष्पं विनिर्दिशेत् ॥2॥

अनेनैव प्रकारेण ध्यानं स्यात् पुष्पवर्णकम्।

एवं पुष्पविधिं प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि ॥3॥

इक्कीस दिन तक आदि से अन्त तक जपकर, भोग, मुक्ति तथा शान्ति के लिए एक सौ आठ सफेद फूल चढाये। आकर्षण तथा वशीकरण के लिए जप के अन्त में एक सौ आठ लाल फूल चढावें। स्तम्भन तथा मोहन के लिए एक सौ आठ पीला फूल चढाये। उच्चाटन तथा मारण की प्रक्रिया में एक सौ आठ काले फूल को चढाये। यह पूजा तथा जप करने के लिए फूल की विधि है। और उपर्युक्त तत्तत् कार्यों में ध्यान के लिए उस उस वर्ण के पुष्प लेकर ही ध्यान करना चाहिए॥1-3॥

इति श्री कुञ्जिकातन्त्रे चण्डोग्रशूलपाणितन्त्रे 'देवरिया' मण्डलान्तर्गत 'मझौली राज्य' निवासि-आचार्य-पण्डित श्री शिवदत्तमिश्रशास्त्रि संपादितं प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रं समाप्तम्।

इस प्रकार पण्डित श्री सन्तशरणमिश्रात्मज श्री शिवदत्तमिश्रशास्त्रि कृत "शिवदत्ती" भाषाटीका में कुञ्जिकातन्त्र के चण्डोग्रशूलपाणितन्त्र नामक खण्ड में प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र समाप्त।

****

—: प्रत्यङ्गिरा मन्त्राः :—

ॐ अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, देवी प्रत्यङ्गिरा देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, ममाखिल कामावाप्तये जपे विनियोगः।

—: ध्यानम् :—

श्लो॥आशाम्बरा मुक्तकचा घनच्छविः, ध्येया सचर्मासिकराहि भूषणा।

दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहितान्वया, प्रत्यङ्गिरा शङ्कर तेजसेरिता ॥

1) मन्त्रः :—ॐ ह्रीं यां कल्पयन्तिनोरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव।

तां ब्रह्मणापनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु॥

2) मन्त्रः :—क्षं ह्रां ह्रीं भक्ष ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे

प्रत्यङ्गिरे क्षं ह्रां ह्रीं हुं फट् स्वाहा।

3) मन्त्रः :—क्षं ह्रां क्रीं भक्ष ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे

प्रत्यङ्गिरे भद्रकाली क्षं ह्रां क्रीं हुं फट् स्वाहा।

अथ श्रीप्रत्यंगिरा मंत्रपुरश्चरणम्

ध्यानम् (मेरुतन्त्रे):–

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि परकृतयानिवारिणीम्।

देवीं प्रत्यंगिरा नाम सर्वापद्विनिवारिणीम्।

ॐ अँ कँ चँ तथा टँ तँ पँ ह्मँ भों ह्रीं समुच्चरेत् ।

हुँस उत्त्वा हुँ तथाऽस्त्रं स्वाहान्तं षोडशाक्षरः ।

मुनिर्विधाता छन्दोष्णिग् देवता षट् प्रकीर्तिताः ।

महावायुर्महापृथ्वी महाकाशस्तथैव च ॥

महासमुद्रनामा च महापर्वत एव च ।

महाग्निश्चेति हुँ बीजं ह्रीं शक्तिः परिकीर्तिता ॥

लज्जया तु षडंगानि षड्दीर्घान्वितयाऽऽचरेत् ।

षमन्त्रदेवींस्ततो मन्त्री ध्यायेत् सुस्थिरमानसः ।

मन्त्र: ---ॐ अँ कँ चँ टँ तँ पँ ह्मँ भों ह्रीं हुँस हुँ अस्त्रं स्वाहा ।

लज्जा (ह्रीं) षडंगानी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः

ध्यानम् :—

नानारत्नार्चिराक्रान्तं वृक्षाम्भः स्त्रवर्णैयुतम् ।

व्याघ्रादिपशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिं स्मरेत् ॥१॥

मत्स्यकूर्मादिबीजाढ्यं नवरत्नसमन्वितम् ।

घनच्छायं सकल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ॥२॥

ज्वालावलीसमाक्रान्तं जगत्त्रितयमद्भुतम् ।

पीतवर्णं महावह्निं संस्मरेच्छत्रुशान्तये ॥३॥

त्वरा समुत्थरावौघमलिनं रुद्धभूदिवम् ।

पवनं संस्मरेद् विश्वजीवनं प्राणरूपतः ॥४॥

नदी-पर्वत-वृक्षादि-कलिताग्रास-संकुला ।

आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मंत्रिणा ॥५॥

सूर्यादिग्रह-नक्षत्र-कालचक्र-समन्विताम् ।

निर्मलं गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रय: पदम् ॥६॥

पुरश्चरणमाह :—

एवं षड्देवता ध्यात्वा सहस्राणि तु षोडश।

जपेन्मन्त्रं दशांशेन षडद्रव्यैर्होममाचरेत्।।।

व्रीहियवस्तण्डुला आज्यं सर्षपश्च यवस्तिलाः।

एतैर्हुत्वा यथाभागं पीठे पूर्वोदिते यजेत्।।

मालामन्त्रस्तत्रैव:—

अथ प्रत्यङ्गिरा माला मन्त्र: सिद्ध: प्रकिर्त्यते।

ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससेशते विश्वसाहस्त्र हिम्।

हिंसिनि सहस्त्रवदने महाबलेऽपराजिते।

प्रत्यङ्गिरे परसैन्य परकर्मपदं वदेत्।

विध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनीति ततो वदेत्।

सर्वभूतेति दमनि सर्वदेवान् वदेत् ततः।

वंधुयुग्मं सर्वविद्याद्विश्छिन्धि क्षोभयद्वयम्।

परयंत्राणीति वदेत् स्फोटय द्वितयं ततः।

सर्वश्रृंखलान्स्त्रोत्रोटय त्रोटय ज्वाल चोच्चरेत्।

ज्वालाजिह्वे करालेति वदने प्रत्यमुच्चरेत्।

गिरे ह्रीं नमः इत्येष सपादशतवर्णवान्।

ब्रह्मानुष्टुप् मुनिश्छन्दो देवी प्रत्यङ्गिरा मता।

बीजशक्ति तारमाये कृत्यानाशेति योजनम्।

षडङ्गानां विधिश्चात्र षड्दीर्घान्वित मायया।

विनियोगः :अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि अनुष्टप् छंदः देवीप्रत्यंगिरा देवता ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिं, कृत्यानाशने जपे विनियोगः। लज्जा (ह्रीं) षडंगानी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः

ध्यानम् :–सिंहारुढातिकृष्णाङ्गी ज्वालावक्त्रां भयङ्करीम् ।

शूलखङ्गकरां वस्त्रे दधतीं नूतने भजे ॥

ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससेशते विश्वसहस्त्रहिंसिनि सहस्त्रवदने महाबलेऽपराजितो प्रत्यंगिरे परसैन्य परकर्म विध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् वंध बंध सर्वविद्यां छिन्धि क्षोभय क्षोमय परयंत्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वश्रृंखलान् त्रोटय त्रोटय ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः ।

पुरश्चरणम् :–अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं तिलराजिकाः।

हुत्वा सिद्धमनुर्मंत्री प्रयोगेषु शतं जपेत्॥

ग्रह-भूतादिकारिष्टं सिञ्चेन्मन्त्रं जपन् जलैः।

विनाशयेत् परकृतं यन्त्र-मन्त्रादि साधनम्॥

अथ मन्त्रान्तरम् (सिद्धान्तसंग्रहे)

ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदे महाभैरवि ज्वलज्वल विद्युज्वल ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे क्ष्म्रीं क्ष्म्यैम् नमो नारायणाय घ्रिणुः सूर्यादित्यों सहस्त्रार हुं फट् ।

मुन्याद्या विनियोगान्ता मालामन्त्रवदस्य तु।

षडङ्गानि च पादेन पादार्धैश्चरणेन च।

कुर्याद्वेदादि षड्दीर्घ हृल्लेखापुटितेन च।

शिरो-भ्रू-मध्यवदन-गल-बाहूद्वयेष्वथ।

हृन्नाभि-पार्श्व-कट्यन्धु-पादेन पदशो न्यसेद्।

व्यापकान्तं समस्तेन कृत्वा ध्यायेन्महेश्वरम्।

खड्गचर्मधरां कृष्णां मुक्तकेशीं विवाससम्।

दंष्ट्राकरालवदनां भीषाभां सर्वभूषणाम्।

ग्रसन्तीं वैरिणं ध्यायेत् प्रेरितां शिवतेजसा।

पुरश्चरणमाह :–

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्री प्रयतमानसः।

दशांशं जुहुयात् पश्चादपामार्गेध्म-राजिकाम्।

सर्पिषा च समायुक्तां ततः सिद्धो भवेन्मनुः।

प्रयोगेषु जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशतं बुधः।

तावतैव तु होमेन परकृत्या विनश्यति।

प्रत्यंगिरा यन्त्रम् (मेरुतन्त्रे)

त्रिकोणं च चतु:पत्रं वसुपत्रं तत: परम् ।

कलापत्रं च भूबिम्बं चतुरस्रत्रायवृतम्॥

श्री प्रत्यङ्गिरा यन्त्रोद्धारः–

अथ प्रत्यङ्गिरा पूजायन्त्रं वक्ष्ये श्रृणु प्रिये! ।

त्रिकोणेचार्चयेद्देवीं षट्कोणेष्वङ्गपूजनम्॥

अष्टास्त्रं विलिखेत्पश्चाद्बहिरष्टदलं लिखेत्।

तद्बाह्येऽष्टदलं बाह्ये चतुर्द्वारं तु भूपुरम्॥

मध्ये बीजं समालिख्य कालाग्निरुद्रसंयुताम्।

कृत्यामावाह्य तत्पार्श्वद्वये दुर्गां च भैरवम्॥

काली च भद्रकाली च नित्याकाली त्रिकोणगाः।

त्रिकोणे पूजजयेत्पश्चात्षट्कोणेष्वङ्ग पूजनम्॥

कोणाष्टकेषु चाष्टास्त्रं शिवास्त्राद्यष्टकं विदुः।

शिवास्त्रं कुरिकास्त्रं च अस्त्रं पाशुपतं तथा॥

व्योमास्त्रं चेत्यघोरास्त्रं वायव्याग्नेयकास्त्रकम्।

संहारास्त्राणि चाष्टौ च लिखेदष्टदले ततः॥

बहिरष्टदले ब्राह्म्याद्यष्टकं च समर्चयेत्।

तद्बहिश्चाष्टपत्रेषु असिताङ्गाष्टकं यजेत्॥

चतुरस्त्रे लोकपालांश्चतुर्द्वारेषु च क्रमात्।

दुर्गां सरस्वतीं क्षेत्रपालं च वटुकं यजेत्॥

मध्ये देवीं सुसम्पूज्य षोडशैरुपचारकैः।

प्रसन्नपूजां कृत्वाऽथ देवीं चोद्वासयेच्छिवाम्॥

ग्रन्थान्तरे यन्त्रोद्धारः :–

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धि प्रवर्तकम्।

सर्वसम्मोहनं चक्रं सर्वाशा परिपूरकम्॥

बिन्दुत्रिकोणं वसुकोणयुक्तं, वृत्ताष्टयन्त्रं च त्रिवृत्तयुक्तम्।

भूगेहलक्ष्मी खचितं प्रसिद्धं, प्रात्यङ्गिरं चक्रमिदं मयोक्तम्॥

लयाङ्गमस्य वक्ष्यामि यन्त्रराजस्य पार्वति।

येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत्॥

इन्द्राद्या लोकपालाश्च ब्रह्मानन्तांङ्किताः प्रिये! ।

वज्रादिहेति संयुक्ताः पूज्या भूगेहमण्डले॥

वायव्येशानपर्यन्तं दिव्यसिद्धौघमानुषान्।

गुरूंश्च पूजयेद्देवि पङ्क्ति त्रितयमध्यगान्॥

ब्राह्म्याद्या मातरः पूज्या भैरवाष्टकसंयुताः।

ब्राह्मीमाहेश्वरी भूयः कौमारी वैष्णवी मता॥

वाराह्यनन्तरेन्द्राणी चामुण्डा सप्तमी मता।

अष्टमी स्यान्महालक्ष्मीः प्रोक्तास्तु विश्वमातरः॥

असिताङ्गो रुरुश्चण्ड क्रोध उन्मत्त भैरवः।

कपालो भीषणश्चैव संहाराश्चाष्ट भैरवाः॥

वामावर्तक्रमेणैव रक्तपुष्पैर्विशेषतः।

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा।

जृम्भिणी भ्रामिणी रौद्री तथा संहारिणीति च॥

वसुकोणे तथा पूज्या महाफलमभीप्सुभिः।

वामावर्तेन देवेशि परमार्थप्रदा स्सदा॥

काली च भद्रकाली च नित्याकाली त्रिकोणगाः।

एताः संपूजनीयास्तु शिवाग्रे वामभागतः॥

देवीं रत्नमयीं पात्रे सौवर्णे पूजयेत्सुधीः।

लयाङ्गमेत्तदाख्यातं सर्वसिद्धिप्रदं शिवे॥

पीठशक्तयः :–

जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।

नित्या विलासिनी दोग्ध्री अघोरा मङ्गला नव॥

तारो वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय।

हुं फण्णमः सिद्धमयः पीठं चानेन पूजयेत्॥

समस्ताम्नाय संवेद्य कामेश्वरगृहेश्वरी।

ग्रन्थेनानेन सुप्रीता प्रसन्ना वरदा भव॥

इति पण्डितश्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसंपादिते प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रे प्रत्यङ्गिरा मन्त्रपुरश्चरणम् समाप्तम्।

हवन सामग्री

रोली ,मौली, धूप,अगर बत्ती, कपूर, रूई, अबीर गुलाल, सिन्दूर, पान पत्ता, सुपारी, घी, शहद, यज्ञोपवीत, इत्र, पंचमेवा, लौंग-इलायची, नारियल,पंचरत्न, सर्वौषधी, सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, पीला चन्दन, पीली सरसों, दोना, दक्षिणा (चुट्टे), लाल कपडा, फल (लाल हो तो उत्तम), फूल (खुल्ला) तथा माला = लाल, गङ्गाजल, दूर्वा, आम के पत्ते, दूध, दही, मिठाई ।

हवन विशेष :–मिर्ची, काली मिर्ची, लावा नमक, तिल, चावल, जौ, इन्द्रजौ, कमलगट्टा, गुग्गुल, भोजपत्र, लाल चन्दन चूरा, नवग्रह समिधा, आम की लकडी ।

—: प्रत्यङ्गिरा माला मन्त्राः :—

एषां श्रीप्रत्यङ्गिरा माला मन्त्राणां ब्रह्मा ऋषिः,अनुष्टुप् छन्दः, श्रीप्रत्यङ्गिरा देवता, ओं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कृत्यानिवारणे जपे विनियोगः।

ह्रामित्यादि करहृदयादिन्यासः।

शूल कपाल पाश डमरू मुद्राः प्रदर्श्य ध्यायेत्।

ध्यानम् :—

सिंहारूढाऽतिकृष्णा त्रिभुवनभयकृद्रूपमुग्रं वहन्ती,

ज्वालावक्त्रावसाना नववसनयुगं नीलमण्याभकान्तिः।

शूलं खड्गं वहन्ती निजकरयुगले भक्तरक्षैकदक्षा,

सेयं प्रत्यङ्गिरा संक्षपयतुरिपुभिर्मन्त्रितं वोऽभिचारम्॥

लमित्यादि पञ्चोपचारैः संपूज्य जपेत् ॥

1) मन्त्रः :—ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्र हिंसिनि सहस्र वदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्य परकर्म विध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्दिछिन्दि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वश्रृङ्खला स्त्रोटयत्रोटय ज्वलज्वाला जिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः ॥

2) ॐ नमः कृष्णाम्बरशोभिते, सकलसेवकजनोपद्रवकारक दुष्टग्रहगजघोट संघट्टसंहारिणि,अनेक सिंहकोटिचारिणि कालान्तकि नमोऽस्तु ते।ॐ दुर्गे, सहस्रव दने, अष्टादशभुजमाला विभूषिते, महाबलपराक्रमे,अत्यद्भुते अपराजिते,देवि, प्रत्य ङ्गिरे सर्वातिशायिनि, परकर्मविध्वंसिनि, भयविध्वंसिनि, सर्वशत्रूच्छाटनि, परयन्त्र परतन्त्र परमन्त्रचूर्णघुटिकादि परप्रयोगकृतवशीकरण स्तम्भन जृम्भणादि दोषनिच यभेदिनि,मारणि, मोहिनि,वशीकरणि, स्तम्भिनि,जृम्भिणि, आकर्षिणि, उच्छाटिनि, अन्धकारिणि, सर्वदेवताग्रह योगग्रह योगिनीग्रह ब्रह्मराक्षसग्रह सिद्धग्रह यक्षग्रह गुह्यग्रह विद्याधरग्रह किन्नरग्रह गन्धर्वग्रह अप्सरोग्रह भूतग्रह प्रेतग्रह पिशाचग्रह कूष्माण्डग्रह पूतिनीग्रह मात्रुग्रह पित्रुग्रह भेतालग्रह राजग्रह चोरग्रह गोत्रदेवताग्रह अश्वदेवताग्रह भूदेवताग्रह आकाशदेवताग्रह आधिग्रह व्याधग्रह अपस्मारग्रह उन्मादग्रह गलग्रह कलहग्रह याम्यग्रह डामरग्रह उदकग्रह विद्याग्रह रतिग्रह छायाग्रह बालग्रह शल्यग्रह विशल्यग्रह कालग्रह सर्वदोषग्रह विद्राविणि सर्वदुष्टभक्षिणि सर्वपापनिषूदिनि सर्वयन्त्रस्फोटिनि सर्वश्रृङ्खलात्रोटिनि सर्वमुद्राविदारिणि ज्वालाजिह्वे करालवक्रे रौद्रमूर्ते देवीप्रत्यङ्गिरे महदेवि महाविद्ये महाशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु श्रियं देहि यशो देहि सर्वं देहि पुत्रान्देहि आरोग्यं देहि भुक्ति मुक्ती देहि मम परिवारं रक्ष रक्ष मम पूजा जप होम दानार्चनादिकं न्यूनमधिकं वा संपूर्णं कुरु कुरु स्वाभिमुखीभव मां रक्ष रक्ष मम सर्वापराधान् क्षमस्व क्षमस्व ॥

3) ॐआं ह्रीं क्रों क्षां क्रां प्रत्यङ्गिरे ॐ कान्तिवदने ॐ कामाक्षी ॐ भण्डनमातङ्गि ॐ जनरञ्जनि ॐमहाभीषणि आत्म मन्त्र तन्त्र यन्त्र संरक्षणि महाप्रत्यङ्गिरे ह्रूं कामरूपिणि काकिनि शिरखण्डिके कुरु कुरु महाभैरवि डाकिनी नासिकां छेदय छेदय रक्तलोचनि भूतप्रेतपिशाचदानवांश्छिन्दि छिन्दि मारय मारय त्रासय त्रासय भञ्जय भञ्जय ॐ प्रत्यङ्गिरे सहस्रकोटिसिंहवाहने सहस्रपदे महाबलप

राक्रमे पूजिते अजते अपराजिते देवि परसैन्यविध्वंसिनि परकर्मछेदिनि परविद्या भेदिनि परमन्त्रान् स्फोटय स्फोटय गजमुखि व्याघ्रमुखि वराहमुखि अनेकमुखा र्बुदानन्तसंख्याक परप्रयोगबन्धछेदिनि शिरोबन्धं खण्डय खण्डय मुखबन्धं छेदय छेदय गलबन्धं खण्डय खण्डय हस्तबन्धं मर्दय मर्दय महद्बन्धं मथनय मथनय बाहुबन्धं भञ्जय भञ्जय पार्श्वबन्धं भग्नय भग्नय कुक्षिबन्धं कृन्तय कृन्तय कटिबन्धं कार्शय कार्शय जानुबन्धं जम्भय जम्भय पादबन्धं भञ्जय भञ्जय ॐ नमो भगवति प्रत्यङ्गिरे भद्रकृत्ये मम शिरोललाटकर्ण भ्रू नासिका चक्षुर्वदनाधर गलहस्तबाहु शाखाङ्गुल्यवयवोदराम्बरबन्धान् छेदय छेदय परप्रयोगसर्व प्रतिबन्धकान् खण्डय खण्डय परप्रयोग मन्त्र तन्त्र यन्त्रात्मक सर्वप्रयोगान्मारय मारय छेदय छेदय त्रासय त्रासय अमरप्रयोगान्मारय मारय नरप्रयोगान्नाशय नाशय बन्धय बन्धय भ्रामय भ्रामय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ठां ठां ठां द्रां द्रां द्रां फट् स्वाहा ॥

4) ॐ प्रत्यङ्गिरे कृत्ये तव साधकस्य सर्वशत्रून्दारय दारय हन हन मथ मथ पच पच धम धम सर्वदुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब ॐ टं टं हुं हुं दंष्ट्राकरालिके मयाकृत मन्त्र तन्त्र रक्षणं कुरु कुरु परकृत मन्त्र तन्त्र यन्त्र विषं निर्विषं कुरु कुरु शस्त्रास्त्राद्यभिचारिकसर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कारयितं कुरुते कारयते करिष्यति कारयिष्यति च तान्सर्वान् हन हन प्रत्यङ्गिरे कृत्ये त्वं रक्ष रक्ष तव साधकं मां सपरिवारकं रक्ष रक्ष स्वाहा ॥

5) ॐ ह्रीं खें फ्रें भक्ष ज्वालाजिह्वे करालवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे क्षों क्षौं ह्रीं नमस्तुभ्यं हन हन मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा ॥

6) ॐ आं ह्रीं क्रों कृष्णवाससे शतसहस्रसिंहवदने महाभैरवि ज्वलज्वल ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं क्ष्रौं, ॐ नमो नारायणाय ॐ घृणिस्सूर्य आदित्यों सहस्रार हुं फट्॥

7) ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां चां लां क्षां ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं वां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ सः हुं ॐ क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ॐ हुं प्लुं रक्षां कुरु।ॐ नमो विपरीत प्रत्यङिरायै विद्या राज्ञि त्रैलोक्य वशंकरी सर्व पीडापहारिणी सर्वापन्नाशिनी सर्व माङ्गल्य माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिनी मोदिनी सर्व शास्त्राणां भेदिनी क्षोभिणि तथा परमन्त्र तन्त्र यन्त्र विष चूर्ण सर्व प्रयोगादीनन्येषां निवर्तयित्वा यत्कृतं तन्मेऽस्तु कपालिनी सर्व हिंसा मा कारयति, अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवासुर राक्षसाः तिर्यग्योनि सर्व

हिंसका विरूपकं कुर्वन्ति मम मन्त्र तन्त्र यन्त्र विष चूर्ण सर्व प्रयोगादीन् आत्महस्तेन यः करोति, करिष्यति, कारयिष्यति तान् सर्वान् येषां निवर्तयित्वा पातय कारय मस्तके स्वाहा।

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं तिलराजिकाः।

हुत्वा सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगेषु शतं जपेत्॥

ग्रहभूतादिकाविष्टं सिञ्चेन्मन्त्रं जपन् जलैः।

विनाशयेत्परकृतं यन्त्रमन्त्रादि साधनम्॥

—: अथर्वणभद्रकाली :—

ॐ अस्य श्री अथर्वण भद्रकाली महामन्त्रस्य प्रत्यङ्गिरा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीअथर्वण भद्रकाली देवता, क्षं बीजं, हुं शक्तिः, फट्कीलकं, जपे विनियोगः।

क्षामित्यादि करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम् :—

अव्यात्पञ्चमुखी च सिंहवदना दंष्ट्री विहन्ती मुहुः,

जिह्वाग्रेण दिवाकरेन्दुहुतभुग् नेत्रत्रयोद्भासितम्।

श्यामा विंशति बाहुरुग्रवदना जाग्रद्भिरुग्रायुधैः,

कृत्यां कृन्तति कीर्तनीयचरिता प्रत्यङ्गिरा नित्यशः॥

मनुः :—ह्रीं क्षं भक्ष ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे प्रत्यङ्गिरे क्षं ह्रीं फट स्वाहा।

—:प्रत्यङ्गिरा गायत्री मन्त्राः :—

अ) ॐ प्रत्यंङ्गिरायै विद्महे शत्रुनिषूदिन्यै धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात्।

आ) करालवदनाय विद्महे ज्वालाजिह्वाय धीमहि तन्नः प्रत्यङगिरा प्रचोदयात्॥

इ) ॐ अपराजिताय विद्महे शत्रुनिशूदिन्यै धीमहि तन्नो प्रत्यङ्गिरा प्रचोदयात् ॥

ई) ॐ प्रत्यङ्गिराय विद्महे शत्रुनिशूदिन्यै धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात् ॥

—: प्रत्यङ्गिरा स्तवराजः :—

ॐ अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा उग्रकृत्यादेवी महामन्त्रस्य प्रत्यङ्गिरा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीं शक्तिः,प्रत्यङ्गिरा उग्रकृत्यादेवी देवता, ह्रीं बीजं,क्रों शक्तिः,श्रीं कीलकं –मम सर्वशत्रु संहरणार्थे परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र परकर्म परविद्याद्याभिचारिक विधानार्थे मम सहकुटुम्बस्य सपुत्रकस्य सबान्धवस्य सपरिवारस्य क्षेम स्थैर्यायुरारोग्यैश्व– र्याभिवृध्यर्थे श्री प्रत्यङ्गिरा महादेवी प्रसादसिध्यर्थे प्रत्यङ्गिरा मन्त्रजपे विनियोगः ॥

—: अथ करन्यासः :—

ॐ अं ह्रां ह्रीं सहस्रवदनायै, आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ इं ह्रीं ह्रीं अष्टादशभुजायै, ईं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ उं ह्रूं ह्रीं त्रिनेत्रायै, ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ एं ह्रैं ह्रीं रक्तमाल्याम्बरधरायै, ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ओं ओं ह्रौं ह्रीं सर्वाभरणभूषितायै, औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ अं ह्रः ह्रीं महाभय निवारणायै, अः करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।

एवं हृदयादिन्यासः ……………..भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः ।

—: ध्यानम् :—

सहस्रवदनां देवीं शतबाहूं त्रिलोचनां,

रक्तमाल्याम्बरधरां सर्वाभरणभूषिताम् ।

शक्तिं प्रत्यङ्गिरां ध्यायेत्सर्वकामार्थ सिद्धये,

नमः प्रत्यङ्गिरां देवीं प्रतिकूल निवारिणीम् ॥

मन्त्रसिद्धिं च तां देवीं चिन्तयामि हृदम्बुजे

प्रत्यङ्गिरां शापहरां भूतप्रेत विनाशिनीम् ।

चिन्तये दुग्रकृत्यां तां परमैश्वर्यदायिनीम् ॥

मनुः :—ॐ ह्रीं ईं ग्लौं श्रीं सौं मैं हुं नमःकृष्णवाससे शतसहस्रसिंहवदने अष्टादशभुजे महाबले शतपराक्रम पूजिते, अजिते अपराजिते देवि प्रत्यङ्गिरे परसैन्य परकर्म विध्वंसिनि परमन्त्रछेदिनि परयन्त्र परतन्त्रोच्छाटनि परविद्याग्रासकरे सर्व भूतदमनि क्षं ग्लौं सौं ईं ह्रीं क्रीं क्रां एह्येहि प्रत्यङ्गिरे चिदचिद्रूपे सर्वोपद्रवेभ्यस्स र्वग्रह दोषेभ्यस्सर्वरोगेभ्यः प्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रक्ष ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः, ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ग्लः प्रत्यङ्गिरे परब्रह्म महिषि परमकारुणिके एहि मम शरीरे आवेशय आवेशय मम हृदयेस्फुर स्फुर ममांसे प्रस्फुर सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, जिह्वां कीलय कीलय, बुद्धिं विनाशय विनाशय, प्रत्यङ्गि रे महाकुण्डलिनि चन्द्रकलावतंसिनि भेतालवाहिने प्रत्यङ्गिरे कपालमालाधारिणि त्रिशूलवज्रांकुशबाण बाणासन पाणिपात्र पूरितं मम शत्रु शोणितं पिब पिब, मम शत्रु मांसं खादय खादय, मम शत्रून्ताडय ताडय, मम वैरिजनान्दह दह, मम विद्वेषकारिणि शीघ्रमेव भक्षय भक्षय, श्रीप्रत्यङ्गिरे भक्त कारुणिके शीघ्रमेव दयां कुरु कुरु, सद्यो ज्वरजाड्यमुक्तिं कुरु कुरु,भेताल ब्रह्मराक्षसादीन् जहि जहि, मम शत्रून् ताडय ताडय, प्रारब्धसञ्चितक्रियमानान् दह दह, दूषकान् सद्यो दीर्घरोगयु क्तान् कुरु कुरु, प्रत्यङ्गिरे प्राणशक्तिमये मम वैरिजन प्राणान् हन हन, मर्दय मर्दय, नाशय नाशय, ॐ श्रीं ह्रीं क्रीं सौं ग्लौं प्रत्यङ्गिरे महामाये देवि देवि मम वाञ्छितं कुरु कुरु कुरु, मां रक्ष रक्ष, प्रत्यङ्गिरे स्वाहा।

मन्त्र यन्त्र सुखासीनं चन्द्रचूडं महेश्वरम्।

सहसागत्य चरणे पार्वती परिपृच्छति,

ईश्वर उवाच :—धारणीं परमां विद्यां प्रत्यङ्गिरां महोत्तमाम्।

यो जानाति स्वहस्तेन सर्वं साध्यं हि जिह्वया,

अमृतं पिबते तस्य मृत्युर्नास्ति कदाचन।

त्रिपुरां च समायातां सेमां विद्यां च बिभ्रतीम्,

निर्जिताश्चामरास्सर्वे देवी विद्याभिमानिनी।

गोलकं संप्रवक्ष्यामि भैषज्यमिव धारणात्,

त्रिवृतं धारयेन्मन्त्रं प्रत्यङ्गिरस्सुभाषितम्।

हरिचन्दनमिश्रितेण रोचनैः कुंकुमेन च,

लिखित्वा भूर्जपत्रेण धारणीयं सदा नृपैः।

पुष्पधूपविचित्रैश्च भक्ष्यभोज्यैर्निवेदनम्,

पूजयित्वा यथान्यायं सप्तकुम्भेन वैष्णवीम्।

य इमां धारयेद्विद्यां लिखित्वा रिपुनाशिनीम्,

विलयं यान्ति रिपवः प्रत्यङ्गिरा सुधारणात्।

—: अथ मन्त्रपदानि भवन्ति :—

ॐ नमः सूर्य सहस्रेक्षणाय, ॐ अनादिरूपाय, ॐ पुरुहूताय, ॐ महेश्वराय, ॐ जगच्छान्तिकारिणे, ॐ शान्ताय, ॐ महाघोराय, ॐ अतिघोराय, ॐ प्रभव प्रभव, ॐ दर्शय दर्शय, ॐ मर्दय मर्दय, ॐ हि हि हि, ॐ किलि किलि किलि, ॐ ज्वल ज्वल ज्वल, ॐ ग्रस ग्रस ग्रस, ॐ पिब पिब पिब, ॐ नाशय नाशय नाशय, ॐ जनय जनय जनय, ॐ विदारय विदारय विदारय, देवि देवि

मां रक्ष रक्ष रक्ष, ह्रीं देवि देवि पिशाच किन्नर किंपुरुष उरग विद्याधर रुद्र गरुड गन्धर्व यक्ष राक्षसलोकपालान् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भय, ये च शत्रवश्चाभिचार कर्तारस्तेषां शत्रूणां मन्त्र यन्त्र तन्त्राणि चूर्णय चूर्णय चूर्णय,घातय घातय घातय,Bिश्वमूर्तिं महामूर्तिं जय जय जय, मम शत्रूणां मुखं स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भय, पादं स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भय, मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भय, मम शत्रूणां जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भय, मम शत्रूणां स्थानं कीलय कीलय कीलय, मम शत्रूणां ग्रामं कीलय कीलय कीलय, मम शत्रूणां देशं कीलय कीलय कीलय, ये च पाठकस्य परिवारकास्तेषां शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो भगवति उच्छिष्ट चण्डालि त्रिशूल वज्रांकुशधारिणि नररुधिरमांसभक्षणि कपाल खट्वांगधारिणि मम शत्रून्दह दह दह ग्रस ग्रस पिब पिब खाहि खाहि नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।

ॐ ब्रह्माणि मम नेत्रे रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ कौमारि मम वक्षस्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ वाराहि मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ इन्द्राणि मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐचण्डिके मम गुह्यं रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ मेघवाहने मम ऊरुं रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ चामुण्डि मम जङ्घे रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ वसुन्धरे मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ झः ॐ झः ॐ झः ॐ झः ॐ थः ॐ थः

करन्यासः :—

ॐ मं अङ्गुष्ठायां नमः, ॐ यं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ रं मध्यमाभ्यां नमः, हुं अनामिकाभ्यां नमः,ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,ॐ सौः करतलपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं हृदयादिन्यासः...... भूर्भुव स्वरोमिति दिग्बन्धः

—: ध्यानम् :—

ॐ स्तम्भिनीं मोहिनीं चैवोच्छाटनीं क्षोभिनीं तथा ।

जृम्भिनीं द्राविनीं रौद्रीं तथा संहारिणीं शुभाम्।

(शक्तयः कर्मयोगेन शत्रुपक्षे नियोजयेत्)

ॐ झः झः झः ॐ थः थः थः, ॐ स्फ्रैं स्फ्रैं।

ॐ स्तम्भिनी ष्वेग्रं ष्वेग्निं मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय हुं फट् स्वाहा।

ॐ मोहिनी ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् मोहय मोहय हुं फट् श्वाहा।

ॐ उच्छाटनी ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् उच्छाटय उच्छाटय हुं फट् स्वाहा।

ॐ क्षोभिनी ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुं फट् स्वाहा।

ॐ जृम्भिणि ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय हुं फट् स्वाहा।

ॐ द्राविणि ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् द्रावय द्रावय हुं फट् स्वाहा।

ॐ रौद्रि ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् संतापय संतापय हुं फट् स्वाहा।

ॐ संहारिणि ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् संहारय संहारय हुं फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामरी ष्वेग्निं ष्वेग्निं मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय हुं फट् स्वाहा।

ॐ सर्वसंहारकारिणि महाप्रत्यङ्गिरे सर्वशस्त्रोन्मूलनि स्वाहा।

॥इति श्रीरुद्रयामले श्रीशूलपाणि विरचित सर्वशक्ति श्रीप्रत्यङ्गिरा स्तवराजः॥

—: श्री बगला प्रत्यङ्गिरा कवचम् :—

ॐ अस्य श्री बगला प्रत्यंगिरा मंत्रस्य नारद ऋषि, स्त्रिष्टुप् छन्दः, प्रत्यंगिरा देवता, ह्लीं बीजं, हूं शक्तिः, ह्रीं कीलकं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु विनाशे

विनियोगः ।

मंत्रः :—ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल कामान् साधय: मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान् शत्रुन् खादय-खादय, मारय-मारय, घातय-घातय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

बगला प्रत्यंगिरा कवच :—

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनी देवी क्षोभिणी मोहनी तथा ।

संहारिणी द्राविणी च जृम्भणी रौद्ररूपिणी ।।

इत्यष्टौ शक्तयो देवि शत्रु पक्षे नियोजताः ।

धारयेत् कण्ठदेशे च सर्व शत्रु विनाशिनी ।।

ॐ ह्रीं भ्रामरी सर्व शत्रून् भ्रामय भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं मोहिनी मम शत्रून् मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं संहारिणी मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं जृम्भणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं रौद्रि मम शत्रून् सन्तापय सन्तापय ॐ ह्रीं स्वाहा ।

(इति श्री रूद्रयामले शिवपार्वति सम्वादे बगला प्रत्यंगिरा कवचम्)

(मत्रमहोदधौ) **प्रत्यङ्गिरा मन्त्रः**

मन्त्रः :--ॐ ह्रीं यां कल्पयन्तिनोरयः क्रूरांकृत्यां वधूमिव तां ब्रह्मणा **अपनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तार मृच्छतु ह्रीं ॐ ।**

विनियोगः :--ॐ अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छ न्दः, देवी प्रत्यङ्गिरा देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, परकृत्य निवारणे(मम अखिल अभीष्ट सिद्धये) जपेविनियोगः।

षडङ्गन्यास :–ॐ यां कल्पयन्तिनोरयः ह्रां हृदयाय नमः,

ॐ क्रूरांकृत्यां ह्रीं शिरसे स्वाहा

ॐ वधूमिव ह्रूं शिखायै वषट्

ॐ तां ब्रह्मणा ह्रैं कवचाय हुं

ॐ अपनिर्णुद्मः ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु ह्रः अस्त्राय फट्

पदन्यासः :—

ॐ ह्रीं यां ह्रीं शिरसि।	ॐ ह्रीं कल्पयन्ति ह्रीं भ्रूमध्ये।
ॐ ह्रीं नो ह्रीं मुखे।	ॐ ह्रीं अरयः ह्रीं कण्ठे।
ॐ ह्रीं क्रूरां ह्रीं दक्षिण बाहौ।	ॐ ह्रीं कृत्यां ह्रीं वामबाहौ
ॐ ह्रीं वधूम् ह्रीं हृदि।	ॐ ह्रीं इव ह्रीं नाभौ
ॐ ह्रीं तां ह्रीं दक्षिण ऊरौ	ॐ ह्रीं ब्रह्मणा ह्रीं वाम ऊरौ
ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः ह्रीं दक्षिणजानौ,	ॐ ह्रीं प्रत्यक् ह्रीं वामजानौ
ॐ ह्रीं कर्तारं ह्रीं दक्षिणपादे	ॐ ह्रीं ऋच्छतु ह्रीं वामपादे

ध्यानम् :–आशाम्बरा मुक्तकचाघनच्छविर्ध्येयासचर्मासिककराहिभूषणा।

दंष्ट्रोग्रवक्त्राग्रसिताहितान्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्करतेजसेरिता।।

जपसंख्या एवं हवन :–ऐसा ध्यान करते हुए इस मन्त्र का 10 हजार जप करना चाहिए। तथा अपामार्ग की समिधाएं घी एवं हविष्यान्न से दशांश-होम करना चाहिए।

पीठ एवं आवरण पूजा :–अन्नपूर्णा पीठ पर, अंग पूजा, लोकपाल एवं उनके आयुधों का पूजन करना चाहिए। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र का साधक काम्यप्रयोगों में 100 बार जप करें।

आवरण पूजा :–सर्वप्रथम कर्णिका में निम्नलिखित मन्त्रों से अंगपूजा करनी चाहिए। यथा—

बलिदान के मन्त्र :---ॐ यो मे पूर्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु (इस मन्त्र से इन्द्र को बलिदान देना चाहिए)

ॐ यो मे आग्नेयगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अग्निस्तं तेजराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे दक्षिणगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे नैॠत्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा निॠतिस्तं रक्षराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे पश्चिमगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे वायव्यगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा वायुस्तं प्राणराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे उत्तरगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा सोमस्तं ताराराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे ईशानगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ईशानस्तं गणराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

ॐ यो मे ऊर्ध्वगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा ब्रह्मास्तं प्रजाराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु

ॐ यो मे अधोगतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु ।

प्रत्यङ्गिरा माला मन्त्रः :–ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्र हिंसिनि सहस्त्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्म विध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादि नि सर्वभूतदमनि सर्वदेवान् बन्ध बन्ध सर्वविद्याश्छिन्दि छिन्दि क्षोभय क्षोभय परयन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वश्रृङ्खलास्त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः।

विनियोगः :–ॐ अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, देवी प्रत्यङ्गिरा देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, परकृत्य निवारणे(मम अखिल अभीष्ट सिद्धये) जपेविनियोगः।

षडङ्गन्यासः :---

ह्रां हृदयाय नमः	ह्रैं कवचाय हुम्
ह्रीं शिरसे स्वाहा	ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ह्रूं शिखायै वषट्	ह्रः अस्त्राय फट्

ध्यानम् :–सिंहारूढातिकृष्णं त्रिभुवनभयकृद्रूपमुग्रंवहन्ती,

ज्वालावक्रावसानानववसनयुगं नीलमण्याभकान्तिः।

शूलं खड्गं वहन्तीनिजकरयुगले भक्तरक्षैकदक्षा सेयं

प्रत्यङ्गिरा संक्षपयतु रिपुभिर्निर्मितं वोभिचारम्।।

जपसंख्या एवं हवन :–इस मन्त्र का 10 हजार जप करना चाहिए, तथा तिल एवं राजिका से एक हजार आहुतियां देकर सिद्ध मन्त्र का काम्यप्रयोगों 100 बार जप करना चाहिए।

काम्यप्रयोग :–ग्रह एवं भूतादि से ग्रस्त व्यक्ति पर इस मन्त्र का (१०० बार) जप करते हुए जल से मार्जन करना चाहिए। इस प्रकार परकृत यन्त्र मन्त्र आदि कृत्यों को नष्ट करना चाहिए।

~~~~~~

(तन्त्रान्तरे) **विपरीत प्रत्यङ्गिरा अनुष्ठानम्**

ध्यानम् :–

॥श्लो॥ खड्गं कपालं डमरू त्रिशूलं, सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।

पिंङ्गोर्ध्वकेशासित भीमदंष्ट्रा, भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली।।

विनियोगः :–ॐ अस्य श्री विपरीत प्रत्यङ्गिरा मन्त्रस्य भैरव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री विपरीत प्रत्यङ्गिरा देवता। ह्रीं बीजं। श्रीं शक्तिः। स्वाहा कीलकं। मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः :–ॐ अस्य श्री विपरीत प्रत्यङ्गिरा मन्त्रस्य श्री भैरव ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मखे। श्री विपरीत प्रत्यङ्गिरा देवतायै नमः ह्रुदये। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः पादयोः। स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ। मम सर्वकामसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः -- सर्वाङ्गे।

करन्यासः :–

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ प्रत्यङिरे अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ मां रक्ष रक्ष कनिष्टिकाभ्यां नमः।
~~~~~~

ॐ मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय स्फ्रें हुं फट् स्वाहा करतलकर पृष्टाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः :–

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ श्रीं शिखायै वषट्। ॐ प्रत्यङ्गिरे कवचाय हुम्।

ॐ मां रक्ष रक्ष नेत्र त्रयाय वौषट्।

ॐ मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय स्फ्रें हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ इति दिग्बन्धः। फिर से देवता का ध्यान करें।

जपारम्भ में माला पूजन :–

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

"ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः"इस मन्त्र से माला की गन्ध-पुष्पादि पञ्चोपचार से पूजा कर, माला को दाहिने हाथ में लेकर, उसकी निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे।

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।

जपकाले तु सततं प्रसीद मम सिद्धये॥

मूल मन्त्रः :–"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय स्फ्रें हुं फट् स्वाहा"।

जपान्त में माला पूजन :–

त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।

शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥

"ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः"इस मन्त्र को पढते हुए माला को पुनः सिर से लगाकर पवित्र एवं गुप्त स्थानपररख दें।

नवमहाविद्याओं के मन्त्र :—

ॐ सन्तापिनि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् सन्तापय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ संहारिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् संहारय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ रौद्रि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् रौद्रय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् भ्रामय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ जृम्भिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् जृम्भय-२हुं फट् स्वाहा।

ॐ द्राविणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् द्रावय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ क्षोभिणि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् क्षोभय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ मोहिनि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् मोहय-२ हुं फट् स्वाहा।

ॐ स्तम्भिनि स्फ्रें स्फ्रें मम सपरिवारकस्य शत्रून् स्तम्भय-२ हुं फट् स्वाहा।

अथर्वणवेदोक्त "**प्रत्यङ्गिरा भद्रकाली सूक्तम्**"

द्वात्रिंशदृचस्यास्य प्रत्यङ्गिरा भद्रकाली सूक्तस्य *प्रत्यङ्गिरस ऋषिः।। कृत्या दूषणम् देवता।* प्रथमर्चो *महाबृहती,*

द्वितीयाया *विराङ्गायत्री,* तृतीयादिषण्णां दशम्येकादशी चतुरदश्येकविंशीनां पञ्चविंश्यादितृचस्य त्रिंश्येकत्रिंश्योश्च *अनुष्टुप्,*

नवम्याः *पथ्यापङ्क्तिः,* द्वदश्याः *पङ्क्तिः,* त्रयोदश्या *उरोबृहती,* पञ्चदश्याश्चतुष्पदा *विराङ्गगती,* शोडश्यष्टादश्योः *त्रिष्टुप्,*

सप्तदशीचतुर्वींश्योः *प्रस्तारपङ्क्तिः,* एकोनविंश्या *चतुष्पदा जगती,*विंश्या *विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः,* द्वाविंश्या *एकावसाना*

द्विपदार्ची उष्णिक्, त्रयोविंश्याः *त्रिपदा भुरिग्विषमा गायत्री,* अष्टाविंश्याः *त्रिपदा गायत्री,* एकोनत्रिंश्या *मध्येज्योतिष्मती*

जगती, द्वात्रिंश्याश्च *द्व्यनुष्टुब्गार्भा पञ्चपदातिजगती* छन्दांसि।

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां, हस्तकृतां चिकित्सवः।। सारादेत्वप नुदाम एनाम् ॥१॥

जिस कृत्या (घातक प्रयोग) को निर्माताजन अपने हाथों से उसी प्रकार अनेक ढंग का बनाते हैं, जिस प्रकार विवाहकाल में वधू को सजाते हैं। वह कृत्या हमारे समीप से दूर चली जाए, हम उसे दूर करते हैं ॥ १ ॥

शीर्षण्वती नस्वती कर्णिनी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा सारादेत्वप नुदाम एनाम् ॥२॥

अनेक रूपों वाली, शीर्षभाग वाली, नाक वाली तथा कान वाली बनाई गई जो कृत्याएँ (घातक अभिचार प्रयोग) हैं, वे हमें हानि पहुँचाए बिना दूर चली जाएँ, इन्हें निवारण विधि द्वारा हम दूर खदेड़ते हैं ॥२॥

शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता । जाया पत्या नुत्तेव कर्तारं बन्ध्वृच्छतु ॥३॥

शूद्र, राजा, स्त्री अथवा ब्राह्मणों द्वारा किये गये अभिचार मारकप्रयोग, उन प्रयोक्ताओं के समीप उसी प्रकार लौट जाएँ, जिस प्रकार पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री अपने पिता अथवा भाइयों के पास ही जाती है ॥ ३ ॥

अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम्।यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु ॥४॥

खेत में गौओं में अथवा पुरुषों पर किये गये कृत्या प्रयोगों को हम(अपामार्ग) ओषधि से पहले ही शक्तिहीन कर चुके हैं ॥४॥

अधमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते। प्रत्यक् प्रतिप्रहिम्णो यथा कृत्या कृता हनत् ॥५॥

हिंसक-पाप (कृत्या) प्रयोगकर्ता के पास और शपथरूप (शाप आदि) शाप प्रयोक्ता के पास पहुँचें। हम अभिचार कर्म को इस प्रकार भेजते हैं, जिससे वे प्रयोक्ताओं को ही विनष्ट करें ॥५॥

प्रतीचीन आङ्गिरसोध्यक्षो नः पुरोहितः। प्रतीचीः कृत्या अकृत्यामून्कृत्याकृतो जहि॥६॥

अभिचार कर्म को लौटाने में समर्थ आंगिरसी विद्या का ज्ञाता अध्यक्ष ही हमारा अग्रणी नेता (पुरोहित) है। हे पुरोहित ! आप समक्ष आती हुई कृत्याओं को छित्र-भित्र करते हुए अभिचारकों को ही विनष्ट करें ॥६ ॥

यस्त्वोवाच परेहीति प्रतिकूल मुदाय्यम्। तं कृत्येभिनिवर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः॥७॥

हे कृत्ये ! जिस प्रयोक्ता पुरुष ने तुझे "आगे बढ़ो" ऐसा कहा है, उस विरोधी शत्रु के पास तुम दुबारा लौट जाओ। हम निरपराधियों की आप इच्छा न करें ॥ ७ ॥

यस्ते परूंषि संदधौ रथस्येव भुर्धिया। तं गच्छ तत्र तेयनमज्ञातस्तेयं जनः॥८॥

जिस प्रकार शिल्पकार विचारपूर्वक रथ के अवयवों को संयुक्त करते हैं, उसी प्रकार जिसने घातक प्रयोग के अवयवों को मन्त्रशक्ति से जोड़ा है, हे कृत्ये ! आप उसी के समीप लौट जाएँ, वही आपका अनुकूल स्थान है। यह मनुष्य तो आपसे परिचय रहित ही है ॥८॥

ये त्वा कृत्वा लेभिरे विद्वला अभिचारिणः। शंभ्वी३दं कृत्यादूषणं प्रतिवर्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि॥९॥

हे कृत्ये ! जिन धूर्त अभिचारकों ने आपको बनाकर धारण किया है, उन घातक प्रयोगों के प्रतिकारक कल्याण साधन दुबारा घातक प्रयोक्ता को लौटाने में समर्थ हैं, इसलिए इससे तुम्हें नहलाते हैं, जिससे सभी दोषों का निवारण हो ॥ ९ ॥

यद्दुर्भगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम। अपैतु सर्वं मत्पापं द्रविणं मोप तिष्ठतु॥१०॥

हम जिस मृत पुत्र वाली दुर्भाग्य और शोक में स्नान कराने वाली कृत्या को प्राप्त हो गए हैं, वे सभी पाप हमसे दूर हो तथा हमारे पास प्रचुर धन स्थित रहे ॥ १० ॥

यत्ते पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगृहुः।।संदेश्या३त्सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चतु त्वौषधीः॥११॥

हे मनुष्यों ! पितर जनों के निमित्त श्रद्धाञ्जलि देते समय (उनके प्राणान्त के दोषारोपण के साथ) यदि आपका नाम लिया जाए (ऐसा कोई पाप आपसे हुआ हो) तो उन सभी पापों से ये ओषधियाँ आपको संरक्षित करें ॥ ११ ॥

देवैनसात्पित्र्यान्नामग्राहात्संदेश्यादभिनिष्कृतात्। मुञ्चतु त्वा वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पयस ऋषीणाम्॥१२॥

हे मनुष्यों ! देवों से सम्बन्धित (उनको अवज्ञा से हुए) पाए, पितरों से सम्बन्धित पाए, अपमानित करने के पाप तथा अपशब्दकथन रूप पाप, इन सभी से ये ओषधियाँ, मन्त्रशक्ति ज्ञान सामर्थ्य और ऋषियों के पय: (आशीर्वाद) सहित हमारा संरक्षण करें ॥ १२ ॥

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम्। एवा मत्सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति॥१३॥

जिस प्रकार वायुदेव भूमि से धूलिकणों और अन्तरिक्ष से बादलों को उड़ा देते हैं, उसी प्रकार सभी दुष्प्रभाव मन्त्रशक्ति द्वारा निष्प्रभावी होकर दूर हो ॥१३ ॥

अपक्राम नानदती विनद्धा गर्दभीव। कर्तॄन् नक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्यावता॥१४॥

हे कृत्ये ! आप शक्तिशाली मन्त्र से निष्प्रभावी होकर अपने प्रयोक्ताओं को दौड़ते हुए उसी प्रकार विनष्ट करें, जिस प्रकार बन्धन से छूटी हुई गर्दभी ताड़ना दिये जाने पर चिल्लाती हुई दुलत्तियाँ मारती है ॥ १४ ॥

अयं पन्था कृत्येति त्वा नयामोभिप्रहितां प्रति त्वा प्रहिम्णः ।तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनी विश्वरूपा कुरूटिनी॥१५॥

हे कृत्ये ! यही आपका मार्ग है, शत्रुओं द्वारा भेजी गई आपको दुबारा उन्हीं की ओर भेजते हैं। इस अभिचारक क्रिया द्वारा गाड़ी से युक्त और अनेक सामथ्र्यों से युक्त होकर पृथ्वी पर शब्द (ध्वनि) करती हुई, आप सेना के समान हमारे शत्रुओं पर प्रत्याक्रमण करें ॥ १५ ॥

पराक्ते ज्योतिरपथं ते अर्वागन्यत्रास्मादयना कृणुष्व। परेणेहि नवतिं नाव्या३अतिदुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परेहि॥१६॥

हे कृत्ये ! वापस लौटने के लिए आपको प्रकाश दिखे, लेकिन इस तरफ आने के लिए कोई मार्ग दिखाई न दे। आप हमें त्यागकर दूसरी ओर कहीं जाएँ। नौका द्वारा जाने योग्य दुर्गम, नब्बे नदियों को पार करके दूर चली जाएँ। हमें हिंसित न करके दूर चली जाएँ ॥ १६ ॥

वात इव वृक्षान्निमृणीहि पादय मा गामश्वं पुरुषमुच्छिष एषाम्। कर्तृन्निवृत्येतः कृत्येप्रजास्त्वाय बोधय॥१७॥

जिस प्रकार वायु वृक्षों को तोड़ता है, उसी प्रकार हे कृत्ये ! आप हिंसक शत्रुओं का नाश करते हुए उन्हें उखाड़ फेंके। उनके गाय, घोड़े और पुरुषों को भी शेष न रखें। अपने निर्माताओं को यहाँ से हटाकर 'आप सन्ततिहीन हो गये हो', ऐसा आभास कराएँ ॥ १७ ॥

यां ते बर्हिषि यां श्मशाने क्षेत्रे कृत्यां वलगं वा निचख्नुः। अग्नौ वा त्वा गार्हपत्येभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम्॥१८॥

जो अभिचार कृत्य आपके धान्य (अनाज), श्मशान और खेत में गाड़कर किये गये हैं, आपके निरपराध और पवित्र होने पर भी जिन अभिचारकों द्वारा घातक प्रयोग किये गये है, उन्हें हम निष्प्रभावी करते हैं ॥ १८ ॥

उपाहृतमनुबद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदामकर्त्रम्।तदेतु यत आभृतं तत्राश्व इव विवर्ततां हन्तु कृत्याकृतः प्रजाम्॥१९॥

लाये गये, जाने गये, गाड़े गये और छलपूर्वक प्रयुक्त वैररूप घातक अभिचार को हम प्रयोक्ता की ओर ही छोड़ते हैं। जिस स्थान से वह आया है, वहीं घोड़े के समान वापस लौट जाए और अभिचारक की सन्तानों का विनाश करे ॥ १९ ॥

स्वायसा असयः सन्ति नो गृहे विद्मा ते कृत्ये यतिधा परूंषि। उत्तिगष्ठैव परेहीतोज्ञाते किमिहेच्छसि॥२०॥

हे कृत्ये ! हमारे घर में उत्तम लोहे की तलवारें है, हम आपके अस्थि-जोड़ों को भी भली प्रकार जानते हैं, कि वे कैसी स्थिति में और कितने प्रकार के है, अतः आप यहाँ से उठकर दूर शत्रुओं की ओर भाग जाएँ। हमारे द्वारा न जाने गए हे अज्ञात मारणप्रयोग ! तुम यहाँ क्या (स्वयं लौट जाना या काटे जाना) चाहते हो ? ॥ २० ॥

ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चापि कर्त्स्यामि निर्द्रव। इन्द्राग्नी अस्मान् रक्षतां यौ प्रजानां प्रजावती॥२१॥

हे अभिचार कृत्य ! हम तुम्हारे दोनों पैरों और गर्दन को भी काट देते हैं, अत: आप यहाँ से दूर चले जाएँ। प्रजाजनों के संरक्षक इन्द्र और अग्निदेव हमारा संरक्षण करें ॥ २१ ॥

सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य नः पतयो मृडयन्तु॥२२॥

राजा सोम संसार के समस्त प्राणियों के सुखदाता हैं, हम सबके पालक वे सोमदेव हमारे लिए भी सुख देने वाले हैं ॥ २२ ॥

भवाशर्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते । दुष्कृते विद्युतं देवहेतिम्॥२३॥

भव और शर्व ये दोनों देव, देवों के विद्युत् रूपी आयुध को घातक दुराचारी पापी के ऊपर फेंकें ॥ २३ ॥

[भव और शर्व यह भगवान् शिव के ही विशेषण हैं। उनकी दिव्य शिव शक्तियों से अशिव शक्तियों के निवारण की प्रार्थना की गई है।]

यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा। सेतोऽष्टापदी भूत्वा पुनःपरेहि दुच्छुने॥२४॥

यदि मारण (कृत्या) प्रयोक्ता द्वारा प्रेरित होकर अनेक रूप धारण करके दो अथवा चार पैर वाली बनकर हमारे पास आ रही हो, तो हे दुःख देने वाली कृत्ये! आप यहाँ से आठ पैर वाली होकर (दूनी गति से) पुन: लौट जाएँ ॥ २४ ॥

अभ्यक्ताक्ता सवरंकृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि। जानीहि कृत्यज कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम्॥२५॥

घृत से सिक्त, अच्छी तरह से अलंकृत और सभी दुर्दशाओं को धारण करने वाली हे कृत्ये ! आप यहाँ से दूर चली जाएँ। जिस प्रकार पुत्री अपने पिता को पहचानती है, उसी प्रकार आप अपने उत्पादनकर्ता को पहचानें ॥ २५ ॥

परेहि कृत्ये मा तिष्ठो विद्वस्येव पदं नय। मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति॥२६॥

हे कृत्ये ! आप यहाँ न रुककर दूर चली जाएँ। शिकारी जिस प्रकार घायल हुए शिकार के स्थान पर जाता है, वैसे ही आप भी शत्रु के स्थान पर लौट जाएँ। आप शिकारी रूपा और आपका प्रयोक्ता शिकार के समान है, वह आपका नाश करने में सक्षम नहीं है, अतएव आप लौट जाएँ ॥ २६ ॥

उत हन्ति पूर्वासिनं प्रत्यादायापर इष्वा। उत पछर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति॥२७॥

पहले से बैठे हुए को दूसरा व्यक्ति बाण द्वारा मार देता है और पहले मारने वाले घातकी को दूसरा व्यक्ति विनष्ट करता है (इस प्रकार दोनों ही हानि उठाते हैं) ॥ २७ ॥

एतद्धि श्रृणु मे वचोथेहि यत एयथ। यस्त्वा चकार तं प्रति॥२८॥

हमारे कंथन के अभिप्राय को जानकर जहाँ से आपका आना हुआ था, वहीं पुनः चली जाएँ। हे कृत्ये ! जिसने आपका प्रयोग किया है, उसकी ओर ही आप जाएँ ॥ २८ ॥

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः। यत्र यत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाल्लघीयसी भव॥२९॥

हे कृत्ये ! निरपराध प्राणियों की हिंसा भयंकर कर्म है, इसलिए आप हमारी गौओं, घोड़ों और मनुष्यों का हनन न करें। जहाँ-जहाँ आप स्थापित की गई हैं, वहाँ से हम आपको हटाते हैं, आप पत्ते से भी सूक्ष्म हो जाएँ ॥२९ ॥

यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिता इव। सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि॥३०॥

हे कृत्या अभिचारो ! यदि आप अन्धकार से जाल के समान आच्छादित हुए हों, तो उन सभी घातक प्रयोगों को यहाँ से लुप्त करके हम आपको प्रयोक्ता के पास वापस भेजते हैं ॥ ३० ॥

कृत्याकृतो वलगिनोभिनिष्कारिणः प्रजाम्। मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोमून्कृत्याकृतो जहि॥३१॥

हे कृत्ये ! कपटी घातक प्रयोक्ता जो सन्तानों को विनष्ट करते हैं, आप उनका भी नाश करें। उन अभिचारकों में कोई शेष न रहे, उन सबको मार डालें ॥३१ ॥

यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून्। एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रं कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि॥३२॥

जिस प्रकार सूर्यदेव अन्धकार से निवृत्त होते हैं तथा रात्रि और उषा के ध्वजों का परित्याग करते हैं, उसी प्रकार हम अभिचारी द्वारा किये गये दुष्कृत्यों का परित्याग करते हैं। हाथी द्वारा धूल झाड़ने के समान सहजभाव से शत्रु के अभिचार प्रयोग को हम दूर करते हैं ॥ ३२ ॥

॥इति श्री अथर्ववेदे दशमे काण्डे प्रथमं सूक्तम्॥

श्री प्रत्यङ्गिरा कवचम् :–

ॐ अस्य श्री प्रत्यङ्गिशरा कवचमन्त्रस्य शिवो ऋषिः। विराट् छन्दः। परा शक्तिः। जगद्धात्री प्रत्यङ्गिरा देवता। चतुर्विध पुरुषार्थे विनियोगः।

देव्युवाच :-

भगवन् सर्व धर्मज्ञ सर्व शास्त्रार्थ पारग।

देव्याः प्रत्यङिरायाश्च कवचं यत्प्रकाशितम्।।१।।

सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्व मयि प्रभो! ।।

भैरव उवाच :–

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम्।

सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।।२।।

सर्व सिद्धिमयं देवि सर्वैश्वर्यप्रदायकम्।

पठनाच्छ्रवणान्मर्त्यः त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत्।।३।।

सर्वार्थसाधकस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः।

छन्दोविराड्पराशक्तिः जगद्धात्री च देवता।।४।।

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।।५।।

पाठः :–

प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवं च ललाटकम्।

ह्रीं पातु दक्ष नेत्रं मे लक्ष्मीर्वामं सुरेश्वरी।।६।।

प्रत्यङ्गिरा दक्ष कर्णे वामे कामेश्वरी तथा।

लक्ष्मी प्राणं सदा पातु बन्धनं पातु केशवः।।७।।

गौरी तु रसनां पातु कण्ठं पातु महेश्वरः।

स्कन्धदेशं रतिः पातु भुजौ तु मकरध्वजः।।८।।

शंखं निधिकरः पातु वक्षः पद्मनिधिस्तथा।

ब्राह्मी मध्यं सदा पातु नाभिं पातु महेश्वरी।।९।।

कौमारी पृष्ठदेशं तु गुह्यं रक्षतु वैष्णवी।

वाराही च कटिं पातु चैन्द्री पातु पद द्वयम्।।१०।।

भार्यां रक्षतु चामुण्डा लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान्।

इन्द्रः पूर्वे सदा पातु आग्नेय्यामग्निदेवता।।११।।

याम्ये यमः सदा पातु, नैऋत्यां निऋतिस्तथा।

पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता।।१२।।

सौम्यां सोमः सदा पातु चैशान्यामीश्वरो विभुः।

ऊर्ध्वे प्रजापतिः पातु, ह्यधश्चानन्तदेवता।।।१३।।

राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रान्तरे तथा।

जले स्थले चान्तरिक्षे, शत्रूणां निवहे तथा।।१४।।

एताभिः सहिता देवि! चतुर्बीजा महेश्वरी।

प्रत्यङ्गिरा महाशक्तिः सर्वत्र मां सदावतु।।१५।।

इति ते कथितं देवि! सारात्सारं परात्परम्।

सर्वार्थसाधनं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।१६।।

फलश्रुतिः :–

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः।

इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः।।१७।।

सर्व सिद्वीश्वराः सन्तः सर्वैश्वैर्यमवाप्नुयुः।

पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव सकृत्पठेत्।।१८।।

संवत्सराकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।

प्रीतिमान्यान्तः कृत्वा कमला निश्चला गृहे।।१९।।

वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः।

यो धारयति पुण्यात्मा सर्वार्थसाधनाभिधम्।।२०।।

कवचं परमं पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः।

सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्य विजयी भवेत्।।२१।।

पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा।

बहुपुत्रवती भूत्वा धन्यापि लभते सुतम्।।२२।।

ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्तितत्तनुम्।

एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीम्।।२३।।

दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोचिरान्मृत्युमाप्नुयात्।।

इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे पञ्चाङ्गखण्डे प्रत्यङ्गिरायाः सर्वार्थसाधनं नाम कवचं परिपूर्णम् ॥

अथ प्रत्यङ्गिरा पटलम्

देव्युवाच :–

मेरुपृष्ठे सुखासीनं भैरवं परमेश्वरम्।

प्रसन्नवदनं देवं नागयज्ञोपवीतिनम्॥१॥

गजचर्मपरीधानं भूतिभूषणविग्रहम्।

कपालमालाभरणं गंगावीचिरवाकुलम्॥२॥

चन्द्रार्द्धार्चितमूर्द्धानं सर्वकङ्कणनूपुरम्।

खड्वांग-शूल-पाशाऽसि-विभूषितकराम्भुजम् ॥३ ॥

वामाङ्कस्थित-गौरीशं देवगन्धर्व सेवितम् ।

यक्षेन्द्र-किन्नरनुतं ब्रह्माऽच्युत नमस्कृतम् ॥४ ॥

भैरव उवाच:–

प्रहसन्तं जयन्तं च ध्यायन्तं च मुहुर्मुहुः ।

स्मितपूर्वं प्रणम्यादौ बद्धाञ्जलिपुटं ततः ॥५ ॥

उत्थाय पार्वती देवी भगवन्तमभाषत ।

देव्युवाच:–

भगवंस्त्वं परो देवस्त्रैलोक्य-प्रभुरीश्वरः ॥६ ॥

त्रिगुणात्मा गुणातीतश्चित्स्वरूपो निरंजनः ।

सकलो निष्कलो देवः सत्तारुपो महेश्वरः ॥७ ॥

त्वं किं जपसि देवेश ममाद्य विदितं तु यत् ।

तत्समाचक्ष्व सकलं यद्यहं तव वल्लभा ॥८ ॥

भैरव उवाच:–

एतत् गुह्यतमं लोके न कस्य कथितं मया ।

तथापि तव देवेशि भक्त्या गुह्यं वदाम्यहम् ॥९ ॥

या देवी लोकमातेती महामाहेश्वरी शिवा ।

प्रत्यङ्गिरेति विख्याता षड्विंशति सुवर्णिका ॥१० ॥

सृजते सकलं विश्वं बिभर्ति परमाम्बिका ।

अन्ते सहायकर्त्री च संहरिष्यति तामसी ॥११ ॥

गुणत्रयमयी विद्या महादारिद्र्यवारिणी ।

तस्याः पञ्चाङ्गमीशानि पठाम्यहमहर्निशम् ॥१२॥

जपे विद्यां सर्वमेतांवर्णनामसहस्त्रकम्।

स्तवं मन्त्रमयं देवि पठामि परमेश्वरीम्॥१३॥

तत्प्रसादादहं देवि त्रैलोक्य-प्रभुरीश्वरः।

भैरवो भैरवादेशः सृष्टिस्थितिलयात्मकः॥१४॥

देव्युवाच :–

भगवन् देवदेवेश! निःशेषकरुणाकर।

देव्याः प्रत्यङ्गिरायाश्च पञ्चाङ्गं वक्तुमर्हसि॥१५॥

पटलं पद्धतिं चैव वर्ण-नामसहस्त्रकम्।

स्तोत्रं मन्त्रमयं देवि वक्ष्ये लोकहितेच्छया॥१६॥

अत्रादौ पटलं दिव्यं मूलमन्त्रमयं परम्।

सयन्त्र-मन्त्रसहितं प्रयोगसहितं श्रुणु॥१७॥

अथ मन्त्रोद्धारः :–

प्रणवं वाग्भवं माया लक्ष्मीः प्रत्यंगिरेति च।

मम रक्ष द्वयं देवि! मम शत्रून् पदं मयि॥१८॥

भक्ष द्वयं प्रणवं च स्वाहान्तो मन्त्र उत्तमः।

एषा विद्या मयाख्याता परमानन्ददायिनी॥१९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रूणां (शत्रून्)भक्ष भक्ष स्वाहा

अस्य मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमत्प्रत्यङ्गिरा देवता, ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोगः।

भोगदा सुखदा देवि राज्यदा धनदा तथा।

सिद्धिमोक्षप्रदा विद्या परा सायुज्यदायिनी॥२०॥

गुरुपादप्रसादेन श्रीविद्या यदि लभ्यते।
विना गुरूपदेशेन नाऽन्यत् सिद्ध्यति भारती ॥२१॥
नैस्वान्तरायो न क्लेशो न शौचनियमोऽपि वा।
साक्षात् सिद्धिप्रदो देवि मन्त्रोऽयं भोगमोक्षदः ॥२२॥
वर्णलक्षं पुरश्चर्या तदर्द्धं वा महेश्वरि।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥२३॥
जपाद् दशांशतो होमस्तद्दशांशेन तर्पणम्।
मार्जनं तद्दशांशेन तद्दशांशेन भोजनम्॥ २४॥
वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे।
अर्धरात्रे च मध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत् ॥२५॥
जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनो यो न मन्त्रः फलदायकः ॥२६॥
मन्त्रमुत्कालयेदादौ मन्त्रं स जीवयेत्ततः।
निष्कौटिल्यं चरेत्पश्चात्ततः शापहरीं जपेत् ॥२७॥
सिद्धमन्त्रं जपेच्छुद्धं ततः संपुटितं चरेत्।
क्रमेणानेन देवेशि! श्रीविद्यां यो जपेत्सुधीः ॥२८॥
स साधको भवेल्लोके भोगी सायुज्यमाप्नुयात्।
मन्त्रस्यास्य मुनिश्चैव महाभैरव एव च ॥२९॥
अनुष्टुप् छन्द इत्युक्तः श्रीमत्प्रत्यङ्गिरेति च।
देवतास्यापरा बीजं शक्तिः स्वाहा च कीलकम् ॥३०॥
भोगापवर्गसिद्ध्यर्थं विनियोग इति स्मृतः।

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥३१ ॥

आशाम्बरा मुक्तकचा घनच्छविर्ध्येया सचर्मासिकराहिभूषणा ।

दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहिता त्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्करतेजसेरिता ॥३२ ॥

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धिप्रवर्तकम् ।

सर्वसम्मोहनं चक्रं सर्वाशापरिपूरकम् ॥३३ ॥

बिन्दुत्रिकोणं वसुकोणयुक्तं वृत्ताष्टयन्त्रं च त्रिवृत्तयुक्तम् ।

भूगेहलक्ष्मीखचित्तं च सिद्धिदं प्रात्यङ्गिरं चक्रमेतन्मयोक्तम् ॥३४ ॥

लयाङ्गमस्य वक्ष्यामि यन्त्रराजस्य पार्वति ।

येन श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥३५ ॥

इन्द्राद्या लोकपालश्च ब्रह्मानन्ताङ्किताः प्रिये ।

वज्रादिहेतिसंयुक्ताः पूज्या भूगेहमण्डले ॥३६ ॥

वायव्येशानपर्यन्तं दिव्यसिद्धौघमाप्नुयात् ।

गुरूंश्च पूजयेद् देवि पंक्तित्रितयमध्यगान् ॥३७ ॥

ब्राह्माद्या मातरः पूज्या भैरवाष्टकसंयुताः ।

वामावर्तक्रमेणैव रक्तपुष्पैर्विशेषतः ॥३८ ॥

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा ।

जृम्भिणी भ्रामिणी रौद्री तथा संहारिणीति च ॥३९ ॥

वसुकोणे परा पूज्या महाचीनक्रमेच्छुभिः ।

वामावर्तेन देवेशि! परमार्थप्रदा सदा ॥४० ॥

काली च भद्रकाली च नित्याकाली त्रिकोणगाः ।

एताः संपूजनीयास्तु शिवाग्नी(ग्रे)वामभागतः ॥४१ ॥

देवीं रत्नमयीं पात्रे सौवर्णे पूजयेत् सुधीः।

लयाङ्गमे तदाख्यातं सर्वसिद्धिप्रदं शिवे ॥४२ ॥

प्रयोगानष्टवक्ष्येऽहं श्रुणुष्वावहिता प्रिये।

स्तंभनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः ॥४३ ॥

वशीकरोच्चाटनाख्ये शान्तिकं पौष्टिकं ततः।

एतेषां साधनं वक्ष्ये मन्त्रसिद्धिप्रवर्तकम् ॥ ४४ ॥

येन श्रवणमात्रेण मन्त्रः कल्पद्रुमो भवेत्।

रवो स्नात्वा जपेन्मूलं वटमूलं महेश्वरि ॥४५ ॥

अयुतं तद्दशांशेन हुनेदाज्यं सितां शटीम्।

गोधूममधुनाऽऽलोड्यं स्तंभयेद्वादिनां रसनाम् ॥४६ ॥

जलसूर्येन्दुवातानां गतिरेषां च कामिनाम्।

अश्वत्थस्य तले जप्त्वा मूलविद्यां यथाविधि ॥४७ ॥

अयुतं तद्दशांशेन जुहुयात्सर्पिरेणजम्।

मांसं कणाशटीमिश्रं मोहनं जगतां भवेत् ॥४८ ॥

कुजे वा शनिवारे वा पित्र्यर्क्षे विष्टिसंगमे।

गत्वा शमशानं देवेशि! नत्वा दिग्भूत भैरवान् ॥४९ ॥

चितां सम्पूज्य वीरेश जपेदयुतसङ्ख्यया।

चिताग्नौ जुहुयादाज्यं गुरुपुष्ये शतावरीम् ॥५० ॥

चण्डाल-केश-नखरदन्तमिश्रां च साधकः।

तर्पयेत्तद्दशांशेन भोजयेत् पात्रपूर्वकम् ॥५१ ॥

शत्रुर्मृत्युसमानोऽपि मृत्युमायाति नाऽन्यथा।

करेरिमूले गिरिजे! जपेन्मूलं शिवोऽयुतम् ॥५२ ॥

हुनेदाज्यं वचां शुण्ठीं वानर्यातिबलासमम् ।

मेनका पीनवक्षोजा स्वस्थाभ्याकर्षिता भवेत् ॥५३ ॥

वानरी मूले देवेशि! जपेदयुतसङ्ख्यया ।

हुनेदाज्यं ह्यरघूतं नागवल्लीदलाङ्कितम् ॥५४ ॥

भूबिम्बं तर्पयेद् देवीं दशांशैनेव साधकः ।

शक्रोऽपि दासतां याति किं पुनः क्षुद्रमानुषः ॥५५ ॥

क्रूरर्क्षे क्रूरवेलायां जपेत् प्रेतालये मनुम् ।

अयुतं तु चितावह्नौ हुनेत् सर्पि कणैषणान् ॥५६ ॥

जातीफलं पलं मैषं खररोमाणि पार्वति! ।

रिपूणां सहसा देवि भवेदुच्चाटनं परम् ॥५७ ॥

नदीकूले जपेन्मन्त्रमयुतं साधकोत्तमम् ।

तद्दशांशं हुनेद्राज्यं समृद्धीकं स-पायसम् ॥५८ ॥

कनकं तगरं रात्रौ तर्पयेत्तद्दशांशतः ।

अतिवृष्टेरानावृष्टेर्मारीभीतेर्महेश्वरि ॥५९ ॥

राजभीतेर्महाव्याघ्रात् सद्यः शान्तिः प्रजायते ।

महापर्वदिने देवि यत्र तत्र जपेन्मनुम् ॥६० ॥

अयुतं तद्दशांशेन जुहुयादाज्यपायसम् ।

शैलं सिन्दूरमिश्रं च सपलं स-लवङ्गकम् ॥६१ ॥

ऐणं मांसं शरं मीनं सालं च सकुलत्थकम् ।

सासवंशुकसद्धीत-रजोवत्सम्बरान्वितम् ॥६२ ॥

हुत्वा च तर्पयित्वा च भोजयित्वा च साधकम्।

पितृणां देवतानां च ऋषीणां कुलिनां प्रिये ॥६३ ॥

दिव्यकल्पायुतं देवि! महापुष्टिः प्रजायते।

सर्वथा सर्वदा नित्यं महाविद्यां जपेत् सुधीः ॥६४ ॥

दशांशं होमयेत्तत्र तर्पयेत्तद्दशांशतः।

भोजयेत्तद्दशांशेन मन्त्री किं किं न साधयेत् ॥६५ ॥

मूर्खो वागीशतां याति निर्धनो धनवान् भवेत्।

महादारिद्र्ययुक्तोऽपि भवेद् वैश्रवणोपमः ॥६६ ॥

इह लोके भवेद् भोगी परत्र त्रिदिवं भजेत्।

इतीदं मन्त्रसर्वस्वं प्रत्यङ्गिरा-रहस्यकम् ॥६७ ॥

पटलं गुह्यमीशानि! गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥६८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे पंचाङ्गखण्डे दशविद्यारहस्ये श्रीप्रत्यङ्गिरा पटलं समाप्तम् ॥

श्रीप्रत्यङ्गिराष्टोत्तरशतनामावली

अथ ध्यानम् :–

आशाम्बरा मुक्तकचा घनच्छविर्ध्येया स चर्मासिकरा विभूषणा ।

दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहिता त्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्कर तेजसेरिता ॥

श्यामाभ्यां वेदहस्तां त्रिनयनलसितां सिंहवक्त्रोर्ध्वकेशीं

शूलं मुण्डं च सर्पं डमरूभुजयुतां कुन्तलात्युग्रदंष्ट्राम् ।

रक्तेष्वालीढजिह्वां ज्वलदनलशिखां गायत्रीसावित्रियुक्तां

ध्यायेत्प्रत्यङ्गिरां तां मरणरिपुविषव्याधिदारिद्र्यनाशाम् ॥

ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः ।	ॐ ॐकाररूपिण्यै नमः ।
ॐ विश्वरूपायै नमः ।	ॐ विरूपाक्षप्रियायै नमः ।
ॐ जटाजूटकारिण्यै नमः ।	ॐ कपालमालालङ्कृतायै नमः ।
ॐ नागेन्द्रभूषणायै नमः ।	ॐ नागयज्ञोपवीतधारिण्यै नमः ।
ॐ सकलराक्षसनाशिन्यै नमः ।	ॐ श्मशानवासिन्यै नमः । १०
ॐ कुञ्चितकेशिन्यै नमः ।	ॐ कपालखट्वाङ्गधारिण्यै नमः ।
ॐ रक्तनेत्रज्वालिन्यै नमः ।	ॐ चतुर्भुजायै नमः ।
ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः ।	ॐ ज्वालाकरालवदनायै नमः ।
ॐ भद्रकाल्यै नमः ।	ॐ हेमवत्यै नमः ।
ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः ।	ॐ सिंहमुख्यै नमः । २०
ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः ।	ॐ धूम्रलोचनायै नमः ।
ॐ शङ्करप्राणवल्लभायै नमः ।	ॐ लक्ष्मीवाणीसेवितायै नमः ।
ॐ कृपारूपिण्यै नमः ।	ॐ कृष्णाङ्ग्यै नमः ।
ॐ प्रेतवाहनायै नमः ।	ॐ प्रेतभोगिन्यै नमः ।
ॐ प्रेतभोजिन्यै नमः ।	ॐ शिवानुग्रहवल्लभायै नमः । ३०
ॐ पञ्चप्रेतासनायै नमः ।	ॐ महाकाल्यै नमः ।
ॐ वनवासिन्यै नमः ।	ॐ अणिमादिगुणाश्रयायै नमः ।
ॐ रक्तप्रियायै नमः ।	ॐ शाकमांसप्रियायै नमः ।
ॐ नरशिरोमालालङ्कृतायै नमः ।	ॐ अट्टहासिन्यै नमः ।
ॐ करालवदनायै नमः ।	ॐ ललज्जिह्वायै नमः । ४०

ॐ ह्रींकारायै नमः ।	ॐ ह्रींविभूत्यै नमः ।
ॐ शत्रुनाशिन्यै नमः ।	ॐ भूतनाशिन्यै नमः ।
ॐ सर्वदुरितविनाशिन्यै नमः ।	ॐ सकलापन्नाशिन्यै नमः ।
ॐ अष्टभैरवसेवितायै नमः ।	ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः ।
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः ।	ॐ डाकिनीपरिसेवितायै नमः । ५०
ॐ रक्तान्नप्रियायै नमः ।	ॐ मांसनिष्ठायै नमः ।
ॐ मधुपानप्रियोल्लासिन्यै नमः	ॐ डमरुकधारिण्यै नमः ।
ॐ भक्तप्रियायै नमः ।	ॐ परमन्त्रविदारिण्यै नमः ।
ॐ परयन्त्रनाशिन्यै नमः ।	ॐ परकृत्यविध्वंसिन्यै नमः ।
ॐ महाप्रज्ञायै नमः ।	ॐ महाबलायै नमः । ६०
ॐ कुमारकल्पसेवितायै नमः ।	ॐ सिंहवाहनायै नमः ।
ॐ सिंहगर्जिन्यै नमः ।	ॐ पूर्णचन्द्रनिभायै नमः ।
ॐ त्रिनेत्रायै नमः ।	ॐ भण्डासुनिषेवितायै नमः ।
ॐ प्रसन्नरूपधारिण्यै नमः ।	ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै नमः ।
ॐ सकलैश्वर्यधारिण्यै नमः ।	ॐ नवग्रहरूपिण्यै नमः । ७०
ॐ कामधेनुप्रगल्भायै नमः ।	ॐ योगमायायुगन्धरायै नमः ।
ॐ गुह्यविद्यायै नमः ।	ॐ महाविद्यायै नमः ।
ॐ सिद्धिविद्यायै नमः ।	ॐ खड्गमण्डलसुपूजितायै नमः ।
ॐ सालग्रामनिवासिन्यै नमः ।	ॐ योनिरूपिण्यै नमः ।
ॐ नवयोनिचक्रात्मिकायै नमः	ॐ श्रीचक्रसुचारिण्यै नमः । ८०
ॐ राजराजसुपूजितायै नमः ।	ॐ निग्रहानुग्रहायै नमः ।

ॐ सभानुग्रहकारिण्यै नमः ।	ॐ बालेन्दुमौलिसेवितायै नमः ।
ॐ गङ्गाधरालिङ्गितायै नमः ।	ॐ वीररूपायै नमः ।
ॐ वराभयप्रदायै नमः ।	ॐ वासुदेवविशालाक्ष्यै नमः ।
ॐ पर्वतस्तनमण्डलायै नमः ।	ॐ हिमाद्रिनिवासिन्यै नमः । ९०
ॐ दुर्गारूपायै नमः ।	ॐ दुर्गतिहारिण्यै नमः ।
ॐ ईषणात्रयनाशिन्यै नमः ।	ॐ महाभीषणायै नमः ।
ॐ कैवल्यफलप्रदायै नमः ।	ॐ आत्मसंरक्षिण्यै नमः ।
ॐ सकलशत्रुविनाशिन्यै नमः ।	ॐ नागपाशधारिण्यै नमः ।
ॐ सकलविघ्ननाशिन्यै नमः ।	ॐ परमन्त्रतन्त्राकर्षिण्यै नमः । १००
ॐसर्वदुष्टप्रदुष्टशिरच्छेदिन्यै नमः	ॐ महामन्त्रयन्त्रतन्त्ररक्षिण्यै नमः ।
ॐ नीलकण्ठिन्यै नमः ।	ॐ घोररूपिण्यै नमः ।
ॐ विजयाम्बायै नमः ।	ॐ धूर्जटिन्यै नमः ।
ॐ महाभैरवप्रियायै नमः ।	ॐ महाभद्रकालिप्रत्यङ्गिरायै नमः । १०८

॥ इति श्रीप्रत्यङ्गिराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

* ** * * * * * * * * * *

(श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्या रहस्ये)

श्रीप्रत्यङ्गिरा सहस्रनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच ॥

श्रुणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं त्वत्पुरःसरं ।

सहस्रनाम परमं प्रत्यङ्गिरायाः सिद्धये ॥

सहस्रनामपाठे यः सर्वत्र विजयी भवेत् ।

पराभवो न चास्यास्ति सभायां वासने रणे ॥

तथा तुष्टा भवेद्देवी प्रत्यङ्गिरास्य पाठतः ।

यथा भवति देवेशि! साधकः शिव एव हि ॥

अश्वमेध सहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः ।

सकृत्पाठेन जायन्ते प्रसन्ना यत्परा भवेत् ॥

भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप देवी समीरिता ।

प्रत्यङ्गिरा विनियोगः स्यात्सर्वसम्पत्ति हेतवे ॥

सर्वकार्येषु संसिद्धिः सर्वसम्पत्तिदा भवेत् ।

एवं ध्यात्वा पठेद्देवीं यदीच्छेदात्मनो हितं ॥

अथ ध्यानम् :–

आशांबरा मुक्तकचा घनच्छविर्ध्येया स चर्मासिकरा विभूषणा ।

दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहिता त्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्कर तेजसेरिता ॥

ॐ अस्य श्री प्रत्यङ्गिरा सहस्रनाम महामन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्री प्रत्यङ्गिरा देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, स्वाहा कीलकं, मम सर्वकार्य सिद्ध्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः ।

ॐ देवी प्रत्यङ्गिरा सेव्या शिरसा शशिशेखरा ।

सममासा धर्मिणी च समस्तसुरशेमुषी ॥ 1 ॥

सर्वसम्पत्तिजननी समधीः सिन्धु सेविनी ।

शंभुसीमन्तिनी सोमाराध्या च वसुधा रसा ॥ 2 ॥

रसा रसवती वेला वन्या च वनमालिनी ।

वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी ॥ 3 ॥

वेगिनी वेगदा वेगबला स्थानबलाधिका ।

कला कलाप्रिया कौलि कोमला कालकामिनी ॥ 4 ॥

कमला कमलाक्ष्या च मलस्या कमलावती ।

कुलीना कुटिला कान्ता कोकिला कुलभाषिणी ॥ 5 ॥

कीरकेलिःकला काली कपालिन्यपिकालिका ।

केशिनी च कुशावर्त्ता कौशांबी केशवप्रिया ॥ 6 ॥

काशी काशापहाकाशी शङ्काशा केशदायिनी ।

कुण्डली कुण्डलीस्था च कुण्डलाङ्गदमण्डिता ॥ 7 ॥

कुशापाशी कुमुदनी कुमुदप्रीतिवर्धिनी ।

कुन्दप्रिया कुन्दरुचिः कुरङ्गमदमोदिनी ॥ 8 ॥

कुरङ्गनयना कुन्दा कुरुवृन्दाभिनन्दिनी ।

कुसुंभकुसुमा किञ्चित्क्वणत्किङ्किणिका कटुः ॥ 9 ॥

कठोरा करणा कण्ठा कौमुदी कंबुकण्ठिनी ।

कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कालकण्ठिका ॥ 10 ॥

किबृहस्ता कुमारी च कुरुन्दा कुसुमप्रिया ।

कुञ्जरस्था कुञ्जरता कुंभि कुंभस्तनद्वया ॥ 11 ॥

कुंभिगा करभोरुश्च कदलीदलशालिनी ।

कुपिता कोटरस्था च कङ्काली कन्दशेदरा ॥ 12 ॥

एकान्तवासिनी किञ्चित्कम्पमान शिरोरुहा ।

कादंबरी कदंबस्था कुङ्कुमी प्रेमधारिणी ॥ 13 ॥

कुटुंबिनी प्रियायुक्ता क्रतुः क्रतुकरी क्रिया ।

कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकेयप्रवर्त्तिनी ॥ 14 ॥

कामपत्नी कामधात्री कामेशी कामवन्दिता ।

कामरूपा कामगतिः कामाक्षी काममोहिता ॥ 15 ॥

खङ्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खला ।

खरगा खरनासा च खरास्या खेलनप्रिया ॥ 16 ॥

खरांशुः खेटिनी खरखट्वाङ्गधारिणी ।

खलखण्डिनि विख्यातिः खण्डिता खण्डवी स्थिरा ॥ 17 ॥

खण्डप्रिया खण्डखाद्या सेन्दुखण्डा च खञ्जनी ।

गङ्गा गोदावरी गौरी गोमत्यापिच गौतमी ॥ 18 ॥

गया गौगजी गगना गारुडी गरुडध्वजा ।

गीता गीताप्रिया गायत्रि गोत्रक्षयकरी गदा ॥ 19 ॥

गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवर्धिनी ।

घनस्तनी घनरुचि घनारु घननिःस्वना ॥ 20 ॥

घूत्कारिणी घूतकरी घुघूकपरिवारिता ।

घण्टानादप्रिया घण्टा घनाघोट प्रवाहिनी ॥ 21 ॥

घोररूपा च घोरा च घूनीप्रीति घनाञ्जनी ।

घृताची घनमुष्टिश्च घटाघण्टा घटामृता ॥ 22 ॥

घटास्या घटानाद्यैश्च घातपातनिवारिणी ।

चञ्चरीका चकोरी च चामुण्डा चीरधारिणी ॥ 23 ॥

चातुरी चपला चारुश्चला चेला चलाचला ।

चतुश्चिरन्तना चाका चिया चामी करच्छविः ॥ 24 ॥

चापिनी चपला चम्पूश्चिन्ता चिन्तामणिश्चिता ।

चातुर्वर्ण्यमयी चञ्चप्रच्चौरा चापा चमत्कृतिः ॥ 25 ॥

चक्रवर्ति वधूश्चक्रा चक्राङ्गा चक्रमोदिनी ।

चेतश्चरी चित्तवृत्तीरचेता चेतनप्रदा ॥ 26 ॥

चाम्पेयी चम्पक प्रीतिश्चण्डी चण्डालवासिनी ।

चिरञ्जीवितदाचित्ता तरुमूलनिवासिनी ॥ 27 ॥

छरिकां छत्रमध्यस्था छिद्रा छेदकरी छिदा ।

छुच्छुन्दरी पालयित्री छुन्दरीभनिभस्वना ॥ 28 ॥

छलिनी छलवच्छिन्ना छिटिका छेककृत्तथा ।

छद्मिनी छान्दसी छाया छायाकृच्छ्रादिरित्यपि ॥ 29 ॥

जया च जयदा जातिजृम्भिनी जामलायुता ।

जयापुष्पप्रिया जाया जाप्य जाप्यजगज्जनिः ॥ 30 ॥

जम्बूप्रिया जयस्था च जङ्गमा जङ्गमप्रिया ।

जन्तु जन्तुप्रधाना च जरत्कर्णा जरद्गवा ॥ 31 ॥

जाताप्रिया जीतनस्था जीमूतसदृशच्छविः ।

जन्याजनहिता जाया जम्भ जम्भिलशालिनी ॥ 32 ॥

जवदा जववद्वाहा जमानी ज्वरहा ज्वरी ।

झञ्झानीलमयी झञ्झाझणत्कार कराचला ॥ 33 ॥

झिण्टीशा झस्यकृत् झम्पायमत्रासनिवारिणी ।

टङ्कारस्था टङ्कधरा टङ्काराकारणा टसी ॥ 34 ॥

ठकुराठीत्कुतिश्चैव ठिण्ठीरवसनावृत्ता ।

ठण्ठानीलमयी ठण्ठाठणत्कार कराठसा ॥ 35 ॥

डाकिनी डामरा चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी ।

ढक्काप्रियस्वना ढक्कातपिनी तापिनी तथा ॥ 36 ॥

तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तपःप्रिया ।

तांरा तांरांबरा ताली तालीदलविभूषिणी ॥ 37 ॥

तुरङ्गा त्वरिता तोता तोतला तादिनी तुला ।

तापत्रयहरा तारा तालकेशीतमालिनी ॥ 38 ॥

तमालदलवच्छाया तालस्वनवती तमी ।

तामसी च तमिस्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा ॥ 39 ॥

तटस्यागिल तैलाक्ता तारिणी तपनद्युतिः ।

तिलोत्तमा तिलककृत्तारकादेशशेखरा ॥40 ॥

तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशकुटुंबिनी ।

स्थाणुपत्नी स्थितिकरी स्थलस्था स्थलवर्धिनी ॥ 41 ॥

स्थितिस्थैर्या स्थविष्ठा च स्थावतिः स्थूलविग्रहा ।

दन्तिनी दण्डिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला ॥ 42 ॥

देवी देववधू दैत्यदमिनी दन्तभूषणा ।

दयावती दमवती दमदा दाडिमस्तनी ॥ 43 ॥

दन्दशूकनिभा दैत्यदारिणी देवतानना ।

दोलाक्रीडा दयायुश्च दम्पती देवतामयी ॥ 44 ॥

दशा दीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी ।

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गमा दुर्गवासिनी ॥ 45 ॥

दुर्गन्धनाशिनी दुःस्था दुःस्वप्नशमकारिणी ।

दुर्वारा दुन्दुभिध्वाना दूरगा दूरवासिनी ॥ 46 ॥

दरदा दरहा दात्री दयादा दुहिता दशा ।

धुरन्धरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी ॥ 47 ॥

धीरा धीराधरित्री च धर्मदा धीरमानसा ।

धनुर्धरा च धमिनी धूर्त्ता धूर्त्तपरिग्रहा ॥ 48 ॥

धूमवर्णा धूमपानां धूमला धूममोदिनी ।

नलिनीनन्दनीरन्दा नन्दिनी नन्दबालिका ॥ 49 ॥

नवीना नर्मदा नर्मीनेमिर्नियमनिश्चया ।

निर्मला निगमाचरा निंनगा नग्निका निमिः ॥ 50 ॥

नाला निरन्तरानिघ्नी निर्लोपा निर्गुणा नतिः ।

नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनी नवी ॥ 51 ॥

नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ।

नारायणी निराकारा निपुणा निपुणप्रिया ॥ 52 ॥

निशा निद्रानरेन्द्रस्थानमिता नमितापि च ।

निर्गुण्डिका च निर्गुण्डा निर्मांसा नासिकाभिधा ॥ 53 ॥

पताकिनी पताका चपलप्रीतिर्यशश्विनी ।

पीना पीनस्तना पत्नी पवनाशनशायिनी ॥ 54 ॥

परा पराकला पाका पाककृत्यरतिप्रिया ।

पवनस्था सुपवना तापसिप्रीतिवर्द्धिनी ॥ 55 ॥

पशुवृद्धिकरी पुष्टिः पोषणी पुष्पवर्द्धिनी ।

पुष्पिणी पुस्तककरा पुन्नागतलवासिनी ॥ 56 ॥

पुरन्दरप्रिया प्रीतिः पुरमार्गनिवासिनी ।

पेशा पाशकरा पाशबन्धहा पांशुलापशुः ॥ 57 ॥

पटः पटाशा परशुधारिणी पाशिनी तथा ।

पापघ्नी पतिपत्नी च पतिताऽपतितापि च ॥ 58 ॥

पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिता ।

पानदा पानपात्रा च पानदानकरोद्यता ॥ 59 ॥

पेषा प्रसिद्धिः पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा ।

पतद्गरभा पतद्गात्रा पौनःपुण्यपिवापुरा ॥ 60 ॥

पङ्किला पङ्कमग्ना च पामीपा पञ्जरस्थिता ।

पञ्चमा पञ्चयामा च पञ्चता पञ्चमप्रिया ॥ 61 ॥

पञ्चमुद्रा पुण्डरीका पिङ्गला पिङ्गलोचना ।

प्रियङ्गुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा ॥ 62 ॥

प्रेतासना प्रियालुस्था पाण्डुघ्नी पीतसापहा ।

फलिनी फलदात्री च फलश्री फणिभूषणा ॥ 63 ॥

फूत्कारकारिणी स्फारा फुल्लफुल्लाम्बुजासना ।

फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फितिः स्फीतिकरी तथा ॥ 64 ॥

वनमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्द्धिनी ।

वेणुवाद्या वनचरी वीरा विजयिनीअपि ॥ 65 ॥

विद्या विद्याप्रदा विद्याबोधिनी वेददायिनी ।

बुधमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा ॥ 66 ॥

वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा ।

विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा ॥ 67 ॥

विद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता ।

वितन्द्रा विह्वला वेला विरावा विरतिज्वरा ॥ 68 ॥

विविधार्क करावीरा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला ।

विन्ध्यस्था वीरवन्द्या च वरीयानपराचवित् ॥ 69 ॥

वेदान्त वेद्य वैद्या च वेदस्य विजयप्रदा ।

विरोधवर्द्धिनी वन्ध्या बन्धनिवारिणी ॥ 70 ॥

भयिनी भगमाला च भवानी भयभाविनी ।

भीमा भीमानना भैमी भङ्गुरा भीमदर्शना ॥ 71 ॥

भिल्ली भल्लधरा भीरु भेरुण्डीभी भयापहा ।

भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया ॥ 72 ॥

भगासना भगामोदा भेरी भङ्कारञ्जिनी ।

भीषणा भीषणारावा भगवत्यपिभूषणा ॥ 73 ॥

भारद्वाजी भोगदात्री भवघ्नी भूतिभूषणा ।

भूतिदा भूमिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥ 74 ॥

भ्रमरी भ्रामरीनीला भूपालमुकुटस्थिता ।

मता मनोहरमना मानिनी मोहनी मही ॥ 75 ॥

महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदीय मदिलालया ।

मदोद्धता मदङ्गस्था माधवी मधुमादिनी ॥ 76 ॥

मेधा मेधाकरी मेध्या मध्या मध्यवयस्थिता ।

मद्यपा मांसला मत्स्यमोदिनी मैथुनद्धता ॥ 77 ॥

मुद्रा मुद्रावती माता माया महिम मन्दिरा ।

महामाया महाविद्या महामारी महेश्वरी ॥ 78 ॥

महादेववधूर्मान्या मधुरा वीरमण्डला

मेदस्विनी मीलदश्रीर्महिषासुरमर्दिनी ॥ 79 ॥

मण्डपस्था मठस्था च मदिरागमगर्विता ।

मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी ॥ 80 ॥

मातङ्गिनी च मातङ्गी मतङ्गतनयापि च ।

मधुस्त्रवा मधुरसा मधूककुसुमप्रिया ॥ 81 ॥

यामिनी यामिनीनाथभूषायावकरञ्जिता ।

यवाङ्कुरप्रिया माया यवनी यवनाधिपा ॥ 82 ॥

यमघ्नी यमकन्या च यजमानस्वरूपिणी ।

यज्ञायज्वायजुर्यज्वा यशोनिकरकारिणी ॥ 83 ॥

यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मकरी तथा ।

यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी ॥ 84 ॥

रञ्जिता राजपत्नी च रमारेखा रवेरणी ।

रजोवती रजश्चित्रा रजनी रजनीपतिः ॥ 85 ॥

रागिणी राज्य नीराज्या राज्यदा राज्यवर्धिनी ।

राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥ 86 ॥

रमणी रमणीया च रामा रामावती रती ।

रेतोवती रतोत्साहा रोगहृद्रोगकारिणी ॥ 87 ॥

रङ्गा रङ्गवती रागा रागज्ञा रागकृद्रणा ।

रञ्जिका रञ्जिकारञ्जा रञ्जिनी रक्तलोचना ॥ 88 ॥

रक्तचर्मधरा रञ्जा रक्तस्था रक्तवादिनी ।

रम्भा रम्भाफलप्रीति रम्भोरु राघवप्रिया ॥ 89 ॥

रङ्गभृद्रङ्ग मधुर रोदसी रोदसीग्रहा ।

रोधकृद्रोध हन्त्री च रोगभृद्रोगशायिनी ॥ 90 ॥

वन्दी वन्दिस्तुताबन्ध बन्धूककुसुमाधरा ।

वन्दिता वन्दितामाता विन्दुरा वैन्दवी विधा ॥ 91 ॥

विङ्कि विङ्कपला विङ्का विङ्कस्था विङ्कवत्सला ।

वदिर्विलग्नाविप्रा च विधिर्विधिकरी विधा ॥ 92 ॥

शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खमालावती शमी ।

शङ्खपात्राशिनीशङ्खा शङ्खा शङ्खगला शशी ॥ 93 ॥

शंवी शरावती श्यामा श्यामाङ्गी श्यामलोचना ।

श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थलभूषणा ॥ 94 ॥

शमदा शमहन्त्री च शाकिनी शङ्कुशेखरा ।

शान्तिः शान्तिप्रदा शेषा शेषस्था शेषदायिनी ॥ 95 ॥

शेमुषी शोषिणीशीरी शौरिः शौर्या शरा शिरिः ।

शापहा शापहानीश शम्पा शपथदायिनी ॥ 96 ॥

श्रृङ्गिणी श्रृङ्गपलभुक् शङ्करी शङ्करीचया ।

शङ्का शङ्कापहा संस्था शाश्वती शीतला शिवा ॥ 97 ॥

शिवस्था शवभुक्ता वाशाववर्णा शिवोदरी ।

शायिनी शावशयना शिंशपा शिशुपालिनी ॥ 98 ॥

शवकुण्डलिनी शैवा शङ्करां शिशिराशिरा ।
शवकाञ्ची शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः ॥ 99 ॥
शयनीशङ्कवा शक्तिः शन्तनुः शीलदायिनी ।
सिन्धु सरस्वतीसिन्धुः सुन्दरी सुन्दरानना ॥ 100 ॥
साधुः सिद्धिः सिद्धिदात्री सिद्धा सिद्धसरस्वती ।
सन्ततिः सम्पदा सम्पत्संविन्त्सरतिदायिनी ॥ 101 ॥
सपत्नी सरसा सारा सरस्वतिकरी स्वधा ।
सरःसमा समाना च समाराध्या समस्तदा ॥ 102 ॥
समिद्धा समदा सम्मा सम्मोहा समदर्शना ।
समितिः समिधा सीमा सावित्री सविधा सती ॥ 103 ॥
सवनी सवनादारा सावना समरा समी ।
सिमिरा सतता साध्वी सध्रीचिन्त्यसहायिनी ॥ 104 ॥
हंसी हंसगतिर्हंसा हंसोज्ज्वल निचोलुयुक् ।
हलिनी हलदा हाला हरश्री हरवल्लभा ॥ 105 ॥
हेला हेलावती हेषा ह्लेषस्थाह्लेषवर्द्धिनी ।
हन्ता हन्तिर्हता हत्याहा हन्त तपहारिणी ॥ 106 ॥
हङ्कारी हन्तकृद्धङ्का हीहा हाता हताहता ।
हेमप्रदा हंसवती हारी हातरिसम्मता ॥ 107 ॥
होरी होत्री होलिका च होमा होमो हविर्हरिः ।
हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी ॥ 108 ॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा ।

लीला लोलावती लोला ललनी लालिता लता ॥ 109 ॥

ललामलोचना लोच्यलोलाक्षी लक्षणा लला ।

लम्पती लुम्पती लम्पा लोपामुद्रा ललन्तिनी ॥ 110 ॥

लन्तिका लम्बिका लम्बा लघिमा लघुमध्यमा ।

लघीयसी लघुदयी लूता लूतनिवारिणी ॥ 111 ॥

लोमभृल्लोम लोप्ता च लुलुती लुलुसंयती ।

लुलायस्था च लहरी लङ्कापुरपुरन्दरी ॥ 112 ॥

लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदा लक्ष्या लक्षबलमतिप्रदा ।

क्षुण्णाक्षुपाक्षणाक्षीणा क्षमा क्षान्तिः क्षणावती ॥ 113 ॥

क्षामा क्षामोदरी क्षीमा क्षौमभृत्क्षत्रियाङ्गना ।

क्षया क्षयाकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा ॥ 114 ॥

क्षेमङ्करी क्षयकरी क्षयतत्क्षणदाक्षतिः ।

क्षुरन्ती क्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामाक्षरपातका ॥ 115 ॥

फलश्रुतिः :–

मातुः सहस्रनामेदं प्रत्यङ्गिर्याः प्रदायकं ॥ 1 ॥

यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः ।

अनाचान्तः पठेन्नित्यं दरिद्रो धनदो भवेत् ॥ 2 ॥

मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी निरोगतां व्रजेत् ।

अपुत्रः पुत्रमाप्नोति त्रिषुलोकेषु विश्रुतं ॥ 3 ॥

वन्ध्यापि सूते तनयान् गावश्च बहुदुग्धदाः ।

राजानः पादनंराः स्युस्तस्यदासा इव स्फुटाः ॥ 4 ॥

अरयः सङ्क्षयं यान्ति मनसा संस्मृता अपि ।

दर्शनादेव जायन्ते नरा नार्योऽपि तद्वशाः ॥ 5 ॥

कर्ता हर्ता स्वयंवीरो जायते नात्रसंशयः ।

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं ॥ 6 ॥

दुरितं न च तस्यास्ते नास्ति शोकाः कदाचन ।

चतुष्पथेऽर्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः ॥ 7 ॥

एकाकी निर्भयो धीरो दशावर्तं स्तवोत्तमं ।

मनसा चिन्तितं कार्यं तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥ 8 ॥

विना सहस्रनांना यो जपेन्मन्त्रं कदाचन ।

न सिद्धो जायते तस्य मन्त्रः कल्पशतैरपि ॥ 9 ॥

कुजवारे श्मशाने च मध्यान्हे योजपेदथ ।

शतावर्त्या सर्जयेत कर्ता हर्ता नृणामिह ॥ 10 ॥

रोगान्तर्धोनिशायान्ते पठिताम्मसि संस्थितः ।

सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा ॥ 11 ॥

अर्द्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुं ।

अष्टोत्तरसहस्रं तद्दशवारं जपेत्ततः ॥ 12 ॥

सहस्रनाम चेत्तद्धि तदा याति स्वयं शिवा ।

महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी ॥ 13 ॥

तदा यदि न भीतिः स्यात्ततो द्रोहीति वा भवेत् ।

तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृण्हाति चण्डिका ॥ 14 ॥

यथेष्टं च वरं दत्त्वा याति प्रत्यङ्गिरा शिवा ।

रोचनागुरुकस्तूरी कर्पूर मदचन्दनः ॥ 15 ॥

कुङ्कुम प्रथमाभ्यां तु लिखितं भूर्जपत्रके ।

शुभनक्षत्रयोगे तु कृत्रिमाकृत सत्क्रियः ॥ 16 ॥

कृत सम्पातनासिद्धि धारयेद्दक्षिणे करे ।

सहस्रानामस्वर्णस्थं कण्ठेवापी जितेन्द्रियः ॥ 17 ॥

तदा यन्त्रे नमेन्मन्त्री क्रुद्धा सम्भ्रियते नरः ।

यस्मै ददाति यः स्वस्ति स भवेद्धनदोपमः ॥ 18 ॥

दुष्टश्वापद जन्तूनां न भीः कुत्रापि जायते ।

बालकानामिमां रक्षां गर्भिणीनामपि ध्रुवं ॥ 19 ॥

मोहनं स्तभनाकर्षणमारणोच्चाटनानि च ।

यन्त्रधारणतो नूनं जायन्ते साधकस्य तु ॥ 20 ॥

नीलवस्त्रे विलिखतं ध्वजायां यदि तिष्ठति ।

तदा नष्टा भवत्येव प्रचण्डा परिवाहिनी ॥

एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत् ।

तद्दर्शनत एव स्युः प्राणिनस्तस्य किङ्कराः ॥ 22 ॥

राजपत्न्योऽपि वशगाः किमन्याः परयोषितः ।

एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासैकेन महाकविः ॥ 23 ॥

पण्डितश्च महादीक्षौ जायते नात्रसंशयः ।

शक्तिं सम्पूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रं वरं शुभम् ॥ 24 ॥

इहलोके सुखंभुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ।

इतिनामसहस्रं तु प्रत्यङ्गिरा मनोहरं ॥ 25 ॥

गोप्यं गुप्ततमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ 26 ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्या रहस्ये श्रीप्रत्यङ्गिरासहस्रनमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

ॐ श्री प्रत्यङ्गिरा देवता चरणारविन्दार्पणमस्तु

॥ ॐ तत्सत् ॐ ॥

Back to Index
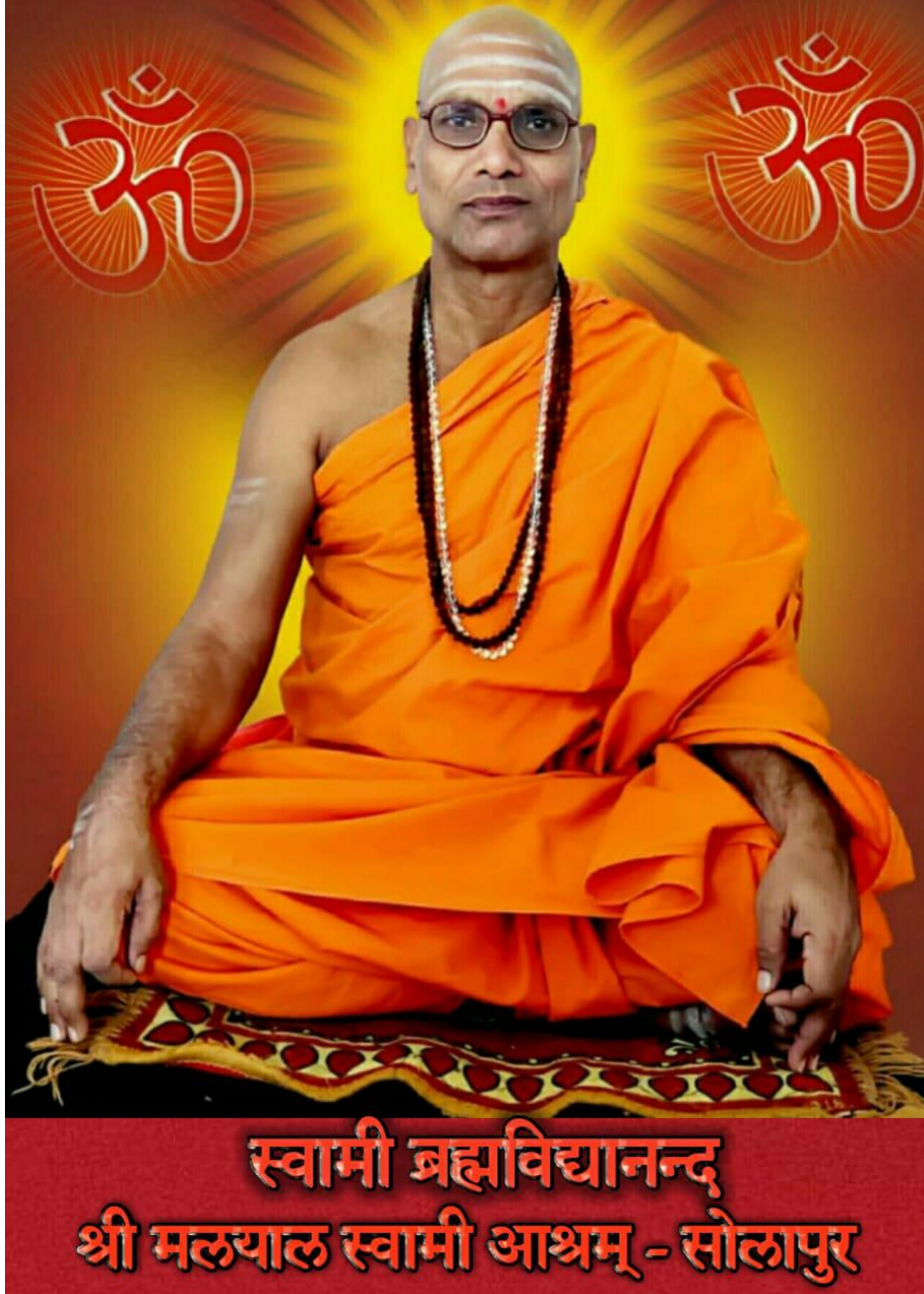
ॐ सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः